

GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA VOL. VI

South Dakota • Tennessee • Texas • Utah • Vermont
Virginia • Washington • West Virginia
Wisconsin • Wyoming



FERDINANDO FREGA

GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA — VOL. VI

L'ORÉAL THROUGH GILLETTE · 20

साउथ डकोटा, टेनेसी, टेक्सस, यूटा, वर्मॉन्ट, वर्जीनिया, वॉशिंगटन, वेस्ट वर्जीनिया, विस्कॉन्सिन, वायोमिंग। अमेरिकी यात्रा का आखिरी पड़ाव, और वह नोट जो इस श्रृंखला को समाप्त करता है।

अध्याय शून्य — साझा आरंभ

यह आरंभिक अध्याय *Women of the United States* के छहों भागों में साझा है। इसे यहाँ पूरा दिया गया है, और समेटकर रखा गया है ताकि श्रृंखला को बिना दोहराव के क्रम से पढ़ा जा सके।

अध्याय शून्य

यहाँ दुनिया कोई इलाका नहीं है: यह एक सीमा है। उत्तरी ध्रुव स्वागत नहीं करता, माफ़ नहीं करता, गलती की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। सफ़ेदी यहाँ एक निरपेक्ष सत्ता की तरह राज करती है, खामोश और बिना स्मृति के। तापमान कोई मौसम का आँकड़ा नहीं है: यह एक शिकारी है। रात महीनों तक चलती है, विचारों को कुचल देती है, लोगों की रूपरेखा बिगाड़ देती है, उनकी इच्छाशक्ति निगल जाती है।

समुदाय गिने-चुने हैं, छोटे हैं, और बंद हैं। इनुइट, युपिक, आर्कटिक के लोग वहाँ रहते हैं जहाँ कोई भी रहना नहीं चुनेगा। यहाँ हर व्यक्ति समूह के अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। अगर तुम काम के नहीं हो, तो तुम बोझ बन जाते हो। और जो बोझ बन जाते हैं, वे खामोशी में, बर्फ़ में, एक ऐसे वातावरण के तर्क में गुम हो जाते हैं जो कोई रियायत नहीं देता।

वैज्ञानिक अड्डे एक और तरह की ठंडक जोड़ते हैं: पदानुक्रमों की ठंडक। यहाँ औरत एक दुर्लभ उपस्थिति है, एक विसंगति, जिसे या तो ढलना होगा या हार माननी होगी।

इस जगह “गुम हो जाने” की अवधारणा ही नहीं है। बस सफ़ेदी है, जो सब कुछ मिटा देती है।

इनडिट और युपिक महिलाएँ

आर्कटिक की लड़की को लाड़-प्यार नहीं मिलता: उसे तैयार किया जाता है। वह जल्दी ही ठंड, अँधेरे और भूख को सहना सीख जाती है। उसे क़बीले के काम का बनना होता है, क्योंकि यहाँ पहचान निजी नहीं होती। वह कार्यात्मक होती है। औरत परिवार और समुदाय का बोझ उठाती है: भोजन, आग, बच्चे, खालें, देखभाल। अधिकारों की बात कोई नहीं करता। नाजुकी की बात कोई नहीं करता। अवसाद है, पर उसका कोई नाम नहीं। हिंसा है, पर उसका कोई गवाह नहीं।

वैज्ञानिक अड्डों की महिला

पढ़ी-लिखी, सक्षम, अनुशासन की आदी। वह शोधकर्ता, तकनीशियन और डॉक्टर बनकर आती है। जल्दी ही उसे पता चल जाता है कि उत्तरी ध्रुव डिग्रियों को नहीं पहचानता। यहाँ सिर्फ़ मानसिक मज़बूती गिनी जाती है। पुरुषों के पदानुक्रम उस पर हावी रहते हैं, और कमज़ोरी के किसी भी संकेत को कमज़ोरी ही समझा जाता है। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ ताक़त काफ़ी नहीं होती: चरम आत्म-नियंत्रण चाहिए।

पश्चिमी “बाहरी” महिला

आज़ादी में पली-बढ़ी, वह यह मानकर आती है कि ठंड को जीत लेगी। पर यह जगह उसे तोड़ देती है: अकेलापन, छोटी-छोटी जगहें, अंतहीन ख़ामोशियाँ। अड्डे समुदाय नहीं हैं, वे यंत्र हैं। और पुरुषों के बनाए यंत्र के भीतर एक औरत को गुम न हो जाने के लिए लड़ना पड़ता है।

दुनिया के छोर तक की यात्रा

मेरा पड़ोसी अंतोनियो, जिसे सब नीनो कहते थे, बरसों से नॉर्थ केप की, आधी रात के सूरज की, बिना अँधेरे वाले महीनों की बातें करता था। यह एक सपना था जिसे वह जब में रखे फिरता था, किसी असंभव चीज़ की तरह। मई की एक सुबह मैंने उसकी घंटी बजाई और बस इतना कहा: “अपना सूटकेस तैयार करो।

मैं एक घंटे में लौटूँगा। हम 30 दिन में वापस आएँगे।” उसने मुझे हैरानी से, खुशी से देखा। उसकी पत्नी ने, चिंतित होकर, पूछा कि हमारी योजना क्या है। “एक सपने का पीछा,” मैंने जवाब दिया।

हम गाड़ी में बैठ गए। हमारी पत्नियाँ हमें ऐसे देख रही थीं जैसे हम पागल हों। पर यह यात्रा सच्ची थी। नीनो के पास पहले से ही सवालों की भरमार थी। “हम कहाँ जा रहे हैं? मुझे कितने पैसे साथ ले जाने चाहिए?” “आराम से,” मैंने उससे कहा। “हम 54 घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे। बस 5,000 किमी। हम नई रेंज रोवर में हैं। सफ़र का मज़ा लो।”

हर 300 किमी पर मुझे रुकना पड़ता था: वह मुझसे बारह साल बड़ा था, उसकी अपनी रफ़्तार थी। मेरे पास पानी और पेय थे; उसके पास कॉफ़ी और शरीर की ज़रूरतें। और हम जितना आगे बढ़ते गए, वह अपनी ज़िंदगी के बारे में उतना ही ज़्यादा बोलता गया। ऐसी बातें जो मैं कभी न जान पाता अगर वह अंतहीन सड़क न होती।

गाड़ी में अकेले दो आदमी, हमेशा औरतों की बातें करते हुए। वह सिर्फ़ अपनी पत्नी को जानता था। मैं हँसा। मैंने उसे तसल्ली दी: “हम सब ऐसे ही हैं।”

उसने मुझसे पूछा कि 60 घंटे गाड़ी चलाते हुए मैं होश में कैसे रह पाता हूँ। मैंने उसे रूस के बारे में बताया, जब 22 साल की उम्र में मैंने एक ऐसी औरत से मिलने के लिए 51 घंटे गाड़ी चलाई थी जिससे मैं कभी मिला नहीं था। “दूरियाँ सीमाएँ नहीं हैं,” मैंने उससे कहा, “वे बहाने हैं। मेरे पास कभी कोई बहाना नहीं रहा।”

सफ़ेदी में आगमन

हम नॉर्वे में दाखिल हुए। सड़क किनारे एक हॉस्टल। हम गाड़ी वहीं छोड़कर स्लेज से आगे बढ़ने वाले थे।

गाइड पूरी तरह ढकी हुई थी, अभेद्य। जब उसने अपना चश्मा उतारा, तब मुझे पता चला कि वह एक औरत है। एक नॉर्वेजियन औरत, ख़ामोश, सीधी, बर्फ़ जैसी। नीनो स्लेज के बीच में, वह आगे, और मैं अपने 190 सेमी के साथ पीछे, सबसे आखिर में।

अब भी दिन का उजाला था। मेरी घड़ी समय दिखा रही थी, पर यह नहीं बता रही थी कि रात है या सुबह। यह आधी रात का सूरज था। हम नॉर्थ केप पहुँच गए थे।

नीनो रो पड़ा। उसने मुझे गले लगा लिया। मैंने हँसते हुए उससे कहा, “संभलकर... लोग सोचेंगे कि हम गे हैं।” हम हँसे, पर हम दुनिया के छोर पर थे।

फिर आया पाला: -52°C ।

असली आर्कटिक में प्रवेश

वे हमें कपड़े बदलने के लिए एक धातु के कंटेनर में ले गए। बेहद भारी, गद्देदार सूट, उलझी हुई ज़िपों से बंद होने वाले।

गाइड का पैसा मैंने दिया। नीनो को कुछ आदमियों के साथ एक इग्लू में छोड़ दिया गया; मुझे दूसरे में एक परिवार के साथ: एक बूढ़ा आदमी, 70 से 80 के बीच, और 30 से 50 के बीच की तीन औरतें।

वह एक बंद दुनिया थी। सरल। क्रूर।

आदमी एक तरफ़ रहता था। औरतें काम की रफ़्तार बनाए रखती थीं। और शौचालय इग्लू से पाँच मीटर दूर एक टीला था: टट्टी ज़मीन छूने से पहले ही जम जाती थी। मेरा पहला पेशाब एक पीला आर्कटिक तारा बन गया। यह उत्तर था जो मुझे सलाम कर रहा था।

बीच की उम्र वाली औरत, माजी, थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी बोलती थी। बाक़ी सब इशारे थे, आँखें, हाथ। ठंड की भाषा।

जब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सूट कैसे इस्तेमाल करूँ, तो उसने, बिना सोचे, एक छिपी हुई ज़िप दिखाने के लिए मेरी जाँघों के बीच छुआ। न कोई बुरी नीयत थी, न कोई शर्म: बस काम। ज़िंदा रहना।

इग्लू में तीन दिन

वे खाना लाए। धुएँ में पकी मछली, कच्ची मछली, कॉड का कलेजा, व्हेल का पेट। और शार्क के गोले। कोई विकल्प नहीं था। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। यह वही था जो प्रकृति देती है।

फिर मैंने पिया: एक लाल तरल। मुझे लगा शराब है। वह छाना हुआ, उबाला हुआ, मीठा किया हुआ व्हेल का खून था। मैंने उसे पी लिया। उसने मुझे ऐसी ताक़त दी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। एक आदिम ऊर्जा। मुझे लगा कोकीन है। नहीं। यह उत्तर था जो शरीर में उतर रहा था।

औरतें मुझे देखती रहीं। बूढ़ा शिकार पर निकल गया। मैं आराम करता रहा और खून पीता रहा। तीन दिन बिना फ़ोन, इंटरनेट, कंप्यूटर के, बिना नीनो के। बस मैं और वे।

रात नहीं थी। बस रोशनी, आग, बर्फ़ और साँस।

तीनों औरतें सोने के लिए लेट गईं। मैं जगह ढूँढ़ने लगा। सबसे छोटी ने अपनी बाँह उठाई और मुझे पास आने का इशारा किया। वे ठहाका मारकर हँस पड़ीं। मुझे समझ नहीं आया। उन्होंने कहा कि मैं उनका “क्रिसमस” हूँ।

यह कहने का एक तरीका कि मुझे अपना लिया गया था।

मैंने धन्यवाद कहने के लिए उन्हें कुछ पैसे देने की कोशिश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्हें बस एक आलिंगन चाहिए था। और कैलाब्रियाई में कुछ शब्द, ताकि वे खुद को और करीब महसूस कर सकें।

वहाँ मैंने सच्चे उपहारों का मूल्य समझा: वे जिन्हें न खरीदा जा सकता है, न बेचा।

गाइड की विदाई

तीन दिन बाद गाइड आई। उसने तीनों औरतों से एक घंटे तक बात की। मैं बाहर था। मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रही थीं। यह मेरा मामला नहीं था। यह उनकी भाषा थी, उनकी दुनिया, उनका क़ानून।

कंटेनर में, जब मैं कपड़े उतार रहा था, गाइड अंदर आई। जिज्ञासु। सीधी। उत्तरी। उसने मुझे कसकर गले लगाया। उसने मुझे चूमा। उसकी त्वचा दूध जैसी सफ़ेद थी। उसकी आँखें अगस्त के आसमान जैसी नीली थीं।

उसने मुझसे कहा कि मैं उसे अपने साथ ले चलूँ। उस दुनिया से निकलने के लिए वह कुछ भी कर गुज़रती।

मैं आदर से मुस्कुराया। मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मुझे ऐसा करना भी नहीं चाहिए था।

मैंने उसके पास सिर्फ एक वादा छोड़ा: “अगर तुम्हें कुछ भी चाहिए, मुझे एक चिट्ठी लिखना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।” उसने पैसे भी लेने से मना कर दिया। वह एक सुंदर औरत थी, पर अकेली। ऐसा अकेलापन जो दूर से दिखाई नहीं देता। ऐसा अकेलापन जिसे ठंड माफ़ नहीं करती।

घर वापसी

हम नीनो को लेने गए। वह रोमांचित था। वह वापस जाना नहीं चाहता था। पर मेरी उसकी पत्नी से मुलाकात तय थी।

उसने सबको अपने तीन दिनों के बारे में बताया। मैं चुप रहा। मैंने उस आदमी से कभी कुछ साझा नहीं किया। सिर्फ कागज़ से।

और इस तरह, जब नीनो अपनी दुनिया में लौट रहा था, मैं पहले ही दूसरी दुनिया की ओर निकल चुका था। एक और मंज़िल। एक और मुलाकात।

स्वागत है।

उपसंहार

उत्तर तुम्हें ले नहीं जाता: वह तुम्हें बदल देता है। और वह तुम्हें कभी

पूरा वापस नहीं लौटाता। मर्द उत्तरी ध्रुव पर रोशनी, खामोशी, तस्वीरें, सपने ढूँढने आते हैं। औरतें ज़िंदा रहने के लिए रुकती हैं।

मर्द बताते हैं कि उन्होंने क्या देखा। औरतें उस पर चुप रहती हैं जो उन्होंने जिया।

मर्द लौट जाते हैं। औरतें रह जाती हैं। वे ठंड में रह जाती हैं, बर्फ़ के घरों में, अनसुनी खामोशियों में। वे उन समुदायों को सहारा देने के लिए रह जाती हैं जो उनका गुणगान नहीं करते। वे बच्चों, बूढ़ों, अजनबियों की रक्षा के लिए रह जाती हैं। वे अदृश्य रह जाती हैं।

मैं वहाँ से सिर्फ एक स्मृति लेकर आया: एक सुंदर, बेहद सुंदर औरत, पर अकेली। रोमानी अर्थ में नहीं। मानवीय अर्थ में। त्रासद अर्थ में।

चिंतन

उत्तर शरीर को नहीं मारता। वह उपस्थिति को मारता है। और जो बचता है वह सफ़ेदी है: एक ऐसी जगह जहाँ औरतें एक ही समय में जीती भी हैं और गुम भी हो जाती हैं।

इसीलिए मैं लिखता हूँ। क्योंकि चरम जगहें अपनी कहानी खुद नहीं सुनातीं। और जो उनसे होकर गुज़रते हैं, वे चुप रहने की विलासिता नहीं उठा सकते।

मैं नहीं। मैं नहीं। मेरी धरती ने मुझे जन्म दिया, और बाक़ी दुनिया मेरा स्वागत किसी मेहमान की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की तरह करती है।

उत्तर की निरपेक्ष सफ़ेदी से मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की निरपेक्ष उलझन में उतर आया।

संयुक्त राज्य अमेरिका

असंभव काम

अठारह साल एक अमेरिकी कंपनी के लिए काम करना तुम्हें वह देता है जो दुनिया की कोई और कंपनी नहीं दे सकती: एक कार्य-संस्कृति, प्रक्रियाएँ, एक स्पष्ट मिशन, और मूल्यों की एक व्यवस्था जो सिद्धांत नहीं है—वह रोज़ का अभ्यास है। वे उन्हें तुम्हें समझाते नहीं; वे उन्हें तुम्हारे भीतर गढ़ देते हैं। और वे यह तुम्हारी इजाज़त माँगे बिना करते हैं।

मैं न्यूयॉर्क के दफ़्तर में था जब मुझे एक ऐसा काम पेश किया गया जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। पदोन्नति नहीं। तबादला नहीं। एक प्रयोग।

एक गोपनीय कार्यक्रम, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर मानवीय संबंधों के एक मॉडल को परखने के लिए बनाया गया था। उन्होंने मैनेजर, मनोवैज्ञानिक या प्रशिक्षक नहीं चुने थे। उन्होंने असली दुनिया के एक खास तरह के अनुभव वाले लोगों को चुना था। और मेरा नाम सामने आया—हालाँकि मैं अठारह साल से सेल्स में था। वे पद को नहीं देख रहे थे: वे दिमाग़ को देख रहे थे।

परीक्षा समझाने में सरल थी और पूरी करने में बेहद कठिन:

एक साल में अमेरिका के 50 राज्यों का दौरा करना, शहर खुद चुनते हुए और हर एक में कम से कम एक हफ़्ता रुकते हुए।

आखिरी दो हफ़्ते ज़बरदस्ती की छुट्टी होंगे। सारा खर्च वे उठाएँगे। मुझे बस जीना था, देखना था, समझना था, और हर सोमवार एक रिपोर्ट भेजनी थी। एक मानवीय, सूखा, सटीक ब्योरा।

मैंने अनुबंध पर दस्तखत कर दिए। मैंने घर पर ख़बर कर दी। उन्होंने कुछ नहीं पूछा। वे बस यह जानना चाहते थे कि महीने का राशन पहुँचा या नहीं। मैं अमेरिका में एक साल का सामना करने जा रहा था। वे, हमेशा की तरह, अगले महीने का सामना कर रहे थे।

एहतियात के तौर पर, मेरी तनख़्वाह सीधे इटली में मेरे बैंक खाते में जमा की जाती थी। यह मुझे से यह कहने का एक शिष्ट तरीक़ा था: “कोई बेवकूफी मत करना। जो तुम्हारे पास है उसी से जीना। देखते हैं तुम असल में कौन हो।”

सिर्फ़ पंद्रह साल बाद ही मुझे अपनी मूल रिपोर्टों, विश्लेषणों और उस सामग्री तक पहुँच मिली जो उन्होंने मेरे बारे में इकट्ठा की थी। यह किताब वहीं से जन्मी। मुझे इसे प्रकाशित करने की मंजूरी मिल गई, एक शर्त पर: उस कंपनी का नाम कभी न लेना जिसने इसे करवाया था।

इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यह कहानी लोगो के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे देश में एक आदमी के बारे में है जिसे खुद जिए बिना समझना असंभव है।

क्या मैं सबसे दूर के बिंदु से शुरू करूँ?

तार्किक चुनाव था हाशिये से शुरू करना, केंद्र से नहीं। दो सरल कारणों से:

1. मैं प्रयोग से ताज़ा-ताज़ा निकला था: पूरी स्पष्टता, अधिकतम ध्यान।
2. छोर से शुरू करके मैं रास्ता सुधार सकता था और यात्रा को साफ़-सुथरे ढंग से ख़त्म कर सकता था।

मुझे बोस्टन या शिकागो से शुरू करने की ज़रूरत नहीं थी। मुझे एक सरहद से शुरू करना था। एक ऐसी जगह से जो सिर्फ़ कागज़ पर अमेरिका थी।

मैंने जूनो चुना, अलास्का की राजधानी। कटा हुआ। सिर्फ़ नाव या हवाई जहाज़ से पहुँचने लायक़। एक ऐसा शहर जो किसी का नहीं है। शुरुआत के लिए एकदम सही जगह।

संसाधनों का सही उपयोग

निकलने से पहले मैंने वह किया जिसका एक अमेरिकी सबसे पहले सम्मान करता है: मैंने खुद को एक पेशेवर की तरह संगठित किया, किसी पर्यटक की तरह नहीं।

मैंने तीन सबसे लोकप्रिय एयरलाइनों को फ़ोन किया, जिनके घरेलू नेटवर्क सबसे बड़े थे। एक घंटे से भी कम में मैंने 60% छूट पर पचास घरेलू उड़ानों की एक टिकट-पुस्तिका ख़रीद ली।

कोई समय-सीमा नहीं। दिनों की कोई सीमा नहीं। कोई पाबंदी नहीं। बस एक शर्त: उन्हें एक साल के भीतर इस्तेमाल करना।

मैंने होटल चेनों, उबर टैक्सियों और कार किराये की कंपनियों के साथ भी यही किया, और फिर पड़ावों का, तरीक़ों का एक ठीक-ठाक कार्यक्रम बनाया, पर समय का नहीं।

मैं तैयार था।

यह मेरी पहली असली कामयाबी थी। पहला संकेत कि मुझे चलना-फिरना आता था। अमेरिका उन्हें इनाम देता है जो कुछ करते हैं, उन्हें नहीं जो इंतज़ार करते हैं।

जब कंपनी ने यह लेन-देन देखा, तो उसने वही किया जो एक अमेरिकी संस्कृति हमेशा करती है: उसने भरोसेमंदी जाँची।

क्या मैं लगातार आवाजाही का एक साल सँभाल सकता था? क्या मैं अप्रत्याशित घटनाओं, दूरियों और आपात स्थितियों से निपट सकता था? क्या मैं आत्मनिर्भर था?

इसीलिए, निकलने से पहले, मैंने एक और निर्णायक बात तय की:

मैंने यह सुनिश्चित किया कि मेरे क्रेडिट कार्ड पर हर महीने कम से कम \$100,000 की क्रेडिट सीमा हो।

यह खर्च करने के लिए नहीं था। यह दिखाने के लिए था कि हम उन्हें सँभाल सकते हैं। अमेरिकी ऐसे ही सोचते हैं: अगर तुम्हारे पास स्वायत्तता नहीं है, तो तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है। और अगर तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है, तो तुम्हारा मूल्यांकन नहीं हो सकता।

उस पल से कार्यक्रम अब एक काम नहीं रहा। वह एक मिशन बन गया।

और अब हम सचमुच यात्रा करते हैं

अलास्का सिर्फ भूगोल के हिसाब से संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा है। यह एक और ही दुनिया है।

यह वह जगह है जहाँ औरतें बिना कोई निशान छोड़े गुम हो जाती हैं। जहाँ कोई शिकायत कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचती। जहाँ शहर एक जंगली महाद्वीप के बीच सभ्यता के टापू भर हैं।

जूनो मेरी पहली परीक्षा थी: एक राजधानी जिसे बाक़ी देश से कोई सड़क नहीं जोड़ती। अमेरिका का एक टुकड़ा जो अमेरिका जैसा नहीं लगता।

यहाँ मुझे कुछ समझ आने लगा: यह यात्रा भौगोलिक नहीं होगी। यह मानवीय होगी।

खंड 1 (भाग I)

अलाबामा – अलास्का – एरिज़ोना – अर्कांसस – कैलिफ़ोर्निया – कोलोराडो – कनेक्टिकट – डेलावेयर – फ़्लोरिडा – जॉर्जिया

खंड 2 (भाग II)

हवाई – आइडाहो – इलिनॉय – इंडियाना – आयोवा – कैनसस – केंटकी – लुइज़ियाना – मेन – मैरीलैंड

खंड 3 (भाग III)

मैसाचुसेट्स – मिशिगन – मिनेसोटा – मिसिसिपी – मिसौरी – मोंटाना – नेब्रास्का
– नेवाडा – न्यू हैम्पशायर – न्यू जर्सी – न्यू मेक्सिको

खंड 4 (भाग IV)

न्यूयॉर्क – वॉशिंगटन

खंड 5 (भाग V)

नॉर्थ कैरोलाइना – नॉर्थ डकोटा – ओहायो – ओक्लाहोमा – ओरेगन –
पेंसिल्वेनिया – रोड आइलैंड – साउथ कैरोलाइना

खंड 6 (भाग VI)

साउथ डकोटा – टेनेसी – टेक्सस – यूटा – वर्मॉन्ट – वर्जीनिया – वेस्ट वर्जीनिया
– विस्कॉन्सिन – वायोमिंग

साउथ डकोटा

साउथ डकोटा हवा, बर्फ़ और दूरियों की धरती है। यह उन जगहों में से है जहाँ प्रकृति राज करती है और समाज उसके पीछे-पीछे चलता है, अक्सर पिछड़ता हुआ। यह ज़मीन, पशुपालन, मूल अमेरिकी रिज़र्वेशनों, छोटे कस्बों, बंद समुदायों, बहुत लंबी चलने वाली सर्दियों और जल्दी ख़त्म हो जाने वाले अवसरों का राज्य है।

यहाँ महिला इन सबके बीच जीती है:

– भारी अकेलापन – दूर-दराज़ की सेवाएँ – चरम जलवायु – बोझिल पारिवारिक भूमिकाएँ – न्यूनतम नौकरियाँ – कुचले हुए मूलनिवासी समुदाय – छिपी हुई ग्रामीण ग़रीबी

साउथ डकोटा बुरा नहीं है। वह बेरहमी से ठोस है। और इस ठोसपन में महिला को हल्के में लिया जाता है।

लकोटा मूलनिवासी रिज़र्वेशन की महिला –

38 वर्ष

पाइन रिज एक खुला घाव है। चरम गरीबी, बेरोज़गारी, कमज़ोर स्कूल, नशे की लतें और कभी न भरे ऐतिहासिक आघात।

अलाना, 38 वर्ष, चार बच्चों की माँ, ओगलाला लकोटा नेशन से है। वह एक छोटे स्कूल में काम करती है। उसका दिन परिवार, काम, समुदाय और लगातार आती आपात स्थितियों के बीच संतुलन बनाने की कसरत है।

बहुत-सी सेवाएँ मौजूद ही नहीं हैं। बहुत-सी मदद पहुँचती ही नहीं। बहुत-से लोग पुराने दर्द और अस्थिर वर्तमान के साथ जीते हैं।

उसकी अनुपस्थिति ऐतिहासिक और राजनीतिक है:

राज्य ने रिज़र्वेशन एक आबादी को समेटकर रखने के लिए बनाया था, उसे सहारा देने के लिए नहीं।

और लकोटा महिला एक ऐसा बोझ ढोती है जो उसका होना ही नहीं चाहिए।

पूर्वी कृषि क्षेत्र की महिला – 52 वर्ष

राज्य के पूर्वी हिस्से में विशाल खेत हैं। अनिश्चित मौसम, जानवर, मशीनें, और ऐसे हिसाब जो कभी पूरी तरह बैठते नहीं।

जूली इन्हीं में से एक खेत पर रहती और काम करती है। वह अपने पति की “मदद” नहीं करती: वह आधा काम करती है, अगर उससे ज़्यादा नहीं।

– जानवर सँभालती है – ट्रैक्टर चलाती है – हिसाब-किताब रखती है – बड़े परिवारों के लिए खाना बनाती है – मौसम की आपदाओं से निपटती है – जमा देने वाली सर्दियों का सामना करती है – हज़ार ऐसे काम करती है जो कभी बही-खातों में नहीं दिखते

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है:

उसका काम ज़रूरी है, पर उसे “घरेलू” कहा जाता है। घरेलू भाड़ में जाए: यह खेती का काम है, कठोर और लगातार।

छोटे शहर की महिला – 44 वर्ष

मिडवेस्ट के मझोले शहरों में ज़िंदगी शांत लगती है, पर यह एक खा जाने वाली शांति है।

कैरन रैपिड सिटी में रहती है। वह एक बड़े सुपरमार्केट में कैशियर है। न्यूनतम वेतन, “कारोबार की ज़रूरत के हिसाब से” लचीले घंटे, बढ़ते खर्च, गिने-चुने विकल्प।

उसकी ज़िंदगी बनी है इन चीज़ों से:

– एक जैसा दोहराया जाने वाला काम – तय करने को लंबी दूरियाँ – कोई सांस्कृतिक गतिविधि नहीं – गिनी-चुनी दोस्तियाँ, क्योंकि यहाँ लोग अलग-थलग जीते हैं – लगातार अटके होने का एहसास

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक और भावनात्मक है:

करने को कामों की कमी नहीं है, बाक़ी सब कुछ कम है।

फिर से शुरुआत करने आई महिला – 31 वर्ष

बहुत-सी महिलाएँ फिर से शुरुआत करने के लिए किफ़ायती जगह की तलाश में साउथ डकोटा आती हैं। कम किराए, शांत सड़कें, सुकून का एक भ्रम।

एमा उनमें से एक है। वह वेस्ट कोस्ट से आई है, जहाँ ज़िंदगी बहुत महँगी थी। उसने सोचा था कि वह यहाँ नए सिरे से शुरुआत करेगी।

फिर उसे सच्चाई का पता चला: – कोई समुदाय नहीं – कोई सहारा नहीं – न्यूनतम काम – भारी अकेलापन – थका देने वाली सर्दी – हर चीज़ से दूरी।

उसकी अनुपस्थिति रिश्तों की है:

उसे जगह तो मिल गई, पर ज़िंदगी नहीं मिली।

उपसंहार – साउथ डकोटा

साउथ डकोटा प्रतिरोध की धरती है। और महिलाएँ सबसे पहले प्रतिरोध करती हैं और सबसे आख़िर में पहचानी जाती हैं।

मूलनिवासी रिज़र्वेशनों में, खेतों पर, छोटे कस्बों में, उसकी ज़िंदगी बिना सुरक्षा-जाल के संतुलन की कसरत है: एक ग़लत क़दम उससे सब कुछ छीन सकता है।

यह एक ऐसा राज्य है जो महिलाओं को बहुत बड़ी भूमिका सौंपता है और फिर उसे निभाने के लिए उन्हें अकेला छोड़ देता है।

चिंतन – साउथ डकोटा

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति सीधे सामाजिक टकराव से पैदा नहीं होती। वह तीन कारकों के जोड़ से पैदा होती है:

– विशाल और अलग-थलग कर देने वाला भूभाग – भारी और अनसुलझा इतिहास – कठोर और हल्के में ली जाने वाली भूमिकाएँ

महिलाएँ अदृश्य हैं क्योंकि उनके संघर्षों को “सामान्य” माना जाता है। और यही समस्या है।

यह अध्याय एक बात साफ़ करता है: साउथ डकोटा ऐसी जगह नहीं है जहाँ महिलाएँ काम नहीं करतीं। यह ऐसी जगह है जहाँ महिलाएँ किसी और से ज़्यादा मेहनत करती हैं और सबसे कम पहचानी जाती हैं।

टेनेसी

टेनेसी संगीत, धूल, पहाड़ों, बाइबल बेल्ट, खेतों, आधुनिक बनने के लिए जूझते शहरों और कभी न बदलना चाहने वाले भीतरी इलाक़ों का राज्य है। यह ऐसी जगह है जहाँ महिलाएँ दो विरोधी ताक़तों के बीच फँसी जीती हैं: आधुनिकता का धक्का (नैशविल, मेम्फ़िस) और परंपरा की दीवार (बाक़ी सब कुछ)।

शहर बढ़ते हैं। उपनगर ठहरे रहते हैं। धर्म राजनीति में घुसता है, और राजनीति निजी ज़िंदगी में। और महिलाएँ पुराने नियमों, कम वेतन, दुर्लभ सेवाओं और ऐसे समुदायों के बीच फँसी रह जाती हैं जो बदले में कुछ दिए बिना बहुत ज़्यादा माँगते हैं।

घूमने के लिए यह एक सुंदर देश है, पर रहने के लिए जटिल।

नैशविल की महिला – 29 वर्ष

नैशविल कंट्री संगीत की राजधानी है, पर भ्रमों की राजधानी भी। हज़ारों युवा “बड़ा नाम कमाने” आते हैं, और कम वेतन वाली नौकरियों, कठोर नाइटलाइफ़ और अंतहीन शिफ़्टों में जा पहुँचते हैं।

जेसिका एक बार में वेट्रेस है, जहाँ हर रात उभरते कलाकार परफ़ॉर्म करते हैं। वह आधी रात के बाद तक चलने वाली शिफ़्टें करती है, धुआँ साँस में लेती है, ज़रूरत से ज़्यादा बोलने वाले ग्राहकों पर मुस्कुराती है, और थकी-हारी घर लौटती है।

शहर संगीत की बात करता है। वह किराए की बात करती है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और सांस्कृतिक है:

वह उस व्यवस्था का हिस्सा है जो सपने को ईंधन देती है, पर उस सपने तक उसकी पहुँच नहीं है।

मेम्फ़िस की अफ़्रीकी अमेरिकी महिला –

43 वर्ष

मेम्फ़िस विशाल आत्मा वाला शहर है: ब्लूज़, सोल, अश्वेत इतिहास। पर यह अमेरिका के सबसे गरीब और सबसे असमान शहरों में से एक भी है।

आयशा एक मुश्किल मोहल्ले के प्राथमिक स्कूल में काम करती है। बहुत-से परिवार हाशिये पर जीते हैं, और बहुत-से बच्चे ऐसे घाव लेकर आते हैं जिन्हें अकेली शिक्षा नहीं भर सकती।

वह सब कुछ थामे रहती है: – कक्षा की समस्याएँ – ग़ैरहाज़िर परिवार – पैसों की कमी – जटिल मोहल्ला – पूरी ज़िम्मेदारी।

उसकी अनुपस्थिति सामाजिक और नस्लीय है:

वह समुदाय के केंद्र में है, पर राज्य उसे स्कूल की मशीन का बस एक पुर्जा मानता है।

ग्रामीण महिला - 50 वर्ष

नैशविल और मेम्फिस के बाहर एक कठोर टेनेसी है: गरीब गाँव, बिखरे हुए घर, खुलती और बंद होती दुकानें, शारीरिक मेहनत, और अकेली मौजूद संस्था के रूप में चर्च।

ब्रेन्डा दक्षिणी एपलाचिया के एक छोटे कस्बे में रहती है। वह वहीं पली-बढ़ी, उसके दो बड़े बच्चे हैं, और एक पति जो रुक-रुककर काम करता है।

वह हर चीज़ का ध्यान रखती है: - घर - बूढ़े माता-पिता - बाहर के काम - मरम्मत - किसी दुकान में कभी-कभार की शिफ्टें।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है:

वह अवसरों के नक्शे से बाहर जीती है। उसके पास कोई विकल्प नहीं हैं। उसके पास कोई गुंजाइश नहीं है।

निजी स्वास्थ्य सेवा में फँसी महिला -

37 वर्ष

बिना बीमे वालों के लिए टेनेसी की स्वास्थ्य व्यवस्था सबसे खराब व्यवस्थाओं में से एक है। बेहिसाब खर्च, बहुत कम सहारा, और ढेर सारे निजी अस्पताल।

मिशेल एक क्लिनिक में सहायक है। हर दिन वह ऐसे मरीज़ देखती है जो पैसे नहीं चुका सकते, ऐसे लोग जो इलाज टालते रहते हैं, और ऐसी माँएँ जो बहुत देर से पहुँचती हैं।

पर वह भी बीच में फँसी है: उसका बीमा न्यूनतम है, वेतन नाकाफ़ी है, और निजी मेडिकल कर्ज़ हैं।

उसकी अनुपस्थिति चिकित्सीय है:

वह देखभाल के क्षेत्र में काम करती है पर खुद इलाज का खर्च नहीं उठा सकती।

उपसंहार – टेनेसी

टेनेसी एक ऐसा राज्य है जो सतह पर बदलता है, पर भीतर से कठोर बना रहता है।

बड़े शहर नई लय थोपते हैं, ग्रामीण इलाके पुरानी परंपराएँ। बीच में, महिलाएँ सब कुछ जोड़कर रखती हैं:

– कमज़ोर परिवार – अस्थिर अर्थव्यवस्था – कमज़ोर शिक्षा – बेहिसाब महँगी स्वास्थ्य सेवा – फ़ैसले सुनाने वाला धर्म – नाकाफ़ी वेतन

वह हर जगह मौजूद है, पर कोई उसे पहचानता नहीं।

चिंतन – टेनेसी

यहाँ स्त्री की अनुपस्थिति दोहरे बोझ से पैदा होती है: इतिहास का बोझ और धर्म का बोझ।

महिलाएँ पुराने कर्तव्यों और आधुनिक समस्याओं के बीच जीती हैं, बिना सुरक्षा के, बिना किसी रास्ते के।

यह ऐसा देश है जहाँ स्त्री के लचीलेपन को हल्के में लिया जाता है, मानो वह स्वाभाविक, अनिवार्य, ज़ाहिर हो। वह ऐसा नहीं है।

यह अध्याय वह बात साफ़ कर देता है जिसे कहने से बहुत लोग बचते हैं: किसी महिला की ताक़त उसे वह न देने का बहाना नहीं है जिसकी वह हक़दार है।

टेक्सस

टेक्सस हर मायने में बड़ा है: भूभाग, पैसा, धर्म, गर्व, विरोधाभास। यह सबसे अमीर राज्यों में से एक है और साथ ही सबसे असमान राज्यों में से भी। एक आर्थिक महाशक्ति, जिसकी राजनीतिक सोच पीछे की ओर देखती है। एक ऐसी जगह जहाँ महिलाओं को इन सबके बीच जीना पड़ता है:

– बोझिल क़ानून – कठोर पारिवारिक भूमिकाएँ – बेक़ाबू शहर – अंतहीन उपनगर – छिपी हुई ग्रामीण गरीबी – ज़रूरी पर अनदेखे आप्रवासी समुदाय – बढ़ते खर्च – नदारद सुरक्षा

टेक्सस बाहर से देखो तो चौंकाता है। भीतर से जियो तो नहीं चौंकाता।

ह्यूस्टन की लातीना महिला – 33 वर्ष

ह्यूस्टन अमेरिका के सबसे विविध शहरों में से एक है। पर नीचे वालों के लिए यह सबसे कठोर शहरों में से भी एक है। मारिबेल अल सल्वाडोर से है। वह बुजुर्गों के एक देखभाल केंद्र में काम करती है। शिफ्टें थका देने वाली हैं, सहारा बहुत कम है, और ट्रैफ़िक हर दिन ज़िंदगी के घंटे खा जाता है।

ह्यूस्टन बहुत बड़ा है: भारी ट्रैफ़ियाँ, अविश्वसनीय बसें, चरम मौसम। यहाँ आना-जाना अपने आप में एक काम है।

मारिबेल अपने परिवार को पैसे भेजती है, अपने बच्चों को पालती है, सब कुछ सहती है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और शहरी है:

शहर उसका इस्तेमाल करता है पर उसकी रक्षा नहीं करता।

तेल क्षेत्रों की श्वेत महिला – 41 वर्ष

तेल वाले शहर बस ऊपर से अमीर दिखते हैं। उनके पीछे तबाह कर देने वाली शिफ्टें, दुर्घटनाएँ, नशा और कमज़ोर परिवार छिपे हैं।

एमी ओडेसा में रहती है। उसका पति रिग पर काम करता है, हफ़्तों के लिए गायब हो जाता है, और टूटा हुआ या बेचैन लौटता है।

वह सब कुछ करती है: – बच्चे – घर – बिल – आपात स्थितियाँ – बड़ा परिवार – अफ़रा-तफ़री – लगातार तनाव।

तेल की दौलत कभी उसके हाथों तक नहीं पहुँचती।

उसकी अनुपस्थिति औद्योगिक है:

टेक्सस तेल का जश्न मनाता है, पर उनका नहीं जो उसकी इंसानी क़ीमत चुकाते हैं।

स्वास्थ्य सुरक्षा के बिना महिला – 35

वर्ष

टेक्सस में महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़े क़ानून बेहद सख़्त हैं। पहुँच मुश्किल है, ख़र्च उँचा है और सेवाएँ गिनी-चुनी हैं। बहुत-सी महिलाओं के लिए एक ही रास्ता बचता है: जैसे-तैसे काम चलाना।

चेल्सी, 35 वर्ष, लबक में रहती है। उसके पास क्लर्क की नौकरी है, पर उसका बीमा नाममात्र का है, और हर गंभीर डॉक्टरी जाँच एक क़र्ज़ बन जाती है।

उसे पुराना दर्द है जिसे वह अनदेखा करती है। कुछ जाँचें हैं जिन्हें वह सालों से टालती आ रही है। उसे बीमारी से ज़्यादा बिल से डर लगता है।

उसकी अनुपस्थिति स्वास्थ्य की भी है और राजनीतिक भी:

राज्य उसके शरीर को नियंत्रित करता है, पर उसका इलाज नहीं करता।

बिना दस्तावेज़ों वाली आप्रवासी महिला – 28

वर्ष

कैरोलिना सैन एंटोनियो में रहती है। वह दफ़्तरों और घरों की सफ़ाई का काम करती है। नक़्द। हमेशा नक़्द।

डर हमेशा साथ रहता है: पुलिस का, इमिग्रेशन का, शोषण करने वाले मालिकों का, फ़ैसला सुनाने वाले पड़ोसियों का।

उसके पास हुनर है, ताक़त है, बुद्धि है, पर उसके पास कोई अधिकार नहीं। राज्य के लिए उसका कोई अस्तित्व नहीं। शहर के लिए वह अनिवार्य है।

उसकी अनुपस्थिति क़ानूनी है:

टेक्सस में आप्रवासी महिला पूरे-पूरे क्षेत्र चलाती है, पर कोई उसे मान्यता नहीं देता।

उपसंहार – टेक्सस

टेक्सस बड़ा है और विरोधाभासों से भरा है: अमीर और गरीब, आधुनिक और पिछड़ा, ताक़तवर और बेरहम।

महिलाएँ राज्य के नाजुक हिस्से को थामे हुए हैं: – बेकाबू शहर – अंतहीन फैलते उपनगर – तेल के प्लेटफ़ॉर्म – कमज़ोर स्कूल – भीड़ भरे घर – कम मज़दूरी – पाबंदियों वाले क़ानून।

वह हर जगह मौजूद है, पर उसे फ़ालतू समझा जाता है।

चिंतन – टेक्सस

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति तीन विशाल ताक़तों के मेल से पैदा होती है: अर्थव्यवस्था, संस्कृति, राजनीति।

टेक्सस एक ऐसी जगह है जहाँ महिलाओं को अपनी ही इच्छाशक्ति से मज़बूत होना पड़ता है। जहाँ आज़ादी का वादा पुरुषों से किया जाता है और सहने की माँग महिलाओं से की जाती है।

यह एक ऐसा राज्य है जो महिलाओं को स्तंभ की तरह चाहता है, पर उनके साथ बदली जा सकने वाली चीज़ों जैसा बर्ताव करता है।

टेक्सस महिलाओं को मिटाता नहीं: उन्हें निगल जाता है।

यूटा

यूटा एक विरोधाभास है। लोग इसे एक परफ़ेक्ट राज्य की तरह देखते हैं: बड़े परिवार, शांत शहर, शानदार पहाड़, हर तरफ़ व्यवस्था। इस दिखावे के पीछे भारी सामाजिक दबाव छिपा है, ख़ासकर महिलाओं पर। मॉर्मन चर्च की हावी मौजूदगी कठोर भूमिकाएँ, तय अपेक्षाएँ और औरत का एक ऐसा ढाँचा गढ़ती है जिसे होना ही चाहिए:

– माँ – पत्नी – शिक्षिका – हमेशा मुस्कुराती हुई – हमेशा हाज़िर – कभी टकराव में नहीं

और जो इस धर्म का हिस्सा नहीं हैं, वे भी उसी साये में जीते हैं।

यूटा सुरक्षित है, हाँ। पर उतना आज़ाद नहीं जितना दिखता है।

दबाव में जीती मॉर्मन महिला – 31 वर्ष

एमिली एक पारंपरिक मॉर्मन समुदाय में पली-बढ़ी। 22 की उम्र में शादी हुई, तीस की होने से पहले उसके तीन बच्चे थे। उसकी ज़िंदगी तय नियमों से चलती है: सेवा, परिवार, वफ़ादारी, व्यवस्था, शांति।

बाहर से वह बेदाग़ है। अंदर से वह थकी हुई है।

वह शिकायत नहीं कर सकती, मदद नहीं माँग सकती, यह नहीं कह सकती कि वह थक गई है। क्योंकि “तुम्हें थकना नहीं चाहिए।”

उसकी अनुपस्थिति आध्यात्मिक और सांस्कृतिक है:

व्यवस्था में उसके भीतर की दुनिया के लिए कोई जगह नहीं, सिर्फ़ भूमिका के लिए है।

वह गैर-धार्मिक महिला जो धारा के

उलट जीती है – 39 वर्ष सांझा मॉर्मन नहीं है। वह मार्केटिंग में काम करती है। उसकी एक बेटी है, वह तलाक़शुदा है, और अपने नियमों से जीती है। यूटा में “अलग” माने जाने के लिए इतना काफ़ी है। सामाजिक रिश्ते मुश्किल हैं। पारंपरिक परिवार उसे शामिल नहीं करते, कई दोस्तियाँ सतही हैं, और कार्यस्थल फ़ैसले सुनाने वालों से भरे हैं।

उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है:

साँचे से बाहर होने का मतलब है घरे से बाहर होना।

लैटिना आप्रवासी महिला – 34 वर्ष

यूटा में लैटिनो आबादी बहुत बड़ी है, और अक्सर अदृश्य। आना एक खाद्य पैकिंग प्लांट में काम करती है। बारह घंटे कीशिफ़्टें, ठंडा माहौल, जमते हाथ, कम मज़दूरी।

स्थानीय समुदाय विनम्र है, हाँ, पर दूर-दूर रहता है। घुलना-मिलना न के बराबर है। सेवाएँ गिनी-चुनी हैं। मकानों का खर्च हर साल बढ़ता है।

आना काम करने के लिए जीती है और अपने परिवार को पैसे भेजती है। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और सांस्कृतिक है:

वह राज्य की मशीनरी का हिस्सा है, पर राज्य उसे मान्यता नहीं देता।

पहाड़ी गाँवों की महिला – 50 वर्ष

यूटा के पहाड़ी इलाकों में ज़िंदगी देखने में सुंदर है, पर जीने में बेहद कठिन।

केरन 2,000 लोगों के एक क़स्बे में रहती है। वह एक स्कूल में काम करती है और हर चीज़ के लिए मीलों सफ़र करती है: डॉक्टर, सुपरमार्केट, दवा की दुकान।

समुदाय बंद है। अकेलापन हमेशा रहता है। सर्दियाँ लंबी, ठंडी और ख़ामोश होती हैं।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है:

जगह विशाल है, पर उसकी ज़िंदगी एक छोटा-सा कमरा है जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं।

उपसंहार – यूटा

यूटा एक ऐसा राज्य है जिसने एक बेदाग़ छवि बनाई है: परिवार, व्यवस्था, स्थिरता।

सब सच है। पर उस छवि के पीछे ऐसी महिलाएँ हैं जो कठोर व्यवस्थाओं को थामे रहती हैं, बिना कमज़ोर पड़ने के अधिकार के, बिना विकल्पों के, बिना गुंजाइश के।

यूटा रूप की रक्षा करता है, इंसान की नहीं।

चिंतन – यूटा

यूटा में महिलाओं की अनुपस्थिति टकराव से पैदा नहीं होती। वह नरम नियंत्रण से आती है, उस तरह के नियंत्रण से जो मुस्कराते हुए तुम्हें बताता है कि तुम्हें

क्या बनना है।

यहाँ औरत को परफ़ेक्ट होना है। आज़ाद नहीं। परफ़ेक्ट।

यह अध्याय इसे नंगा करके रख देता है: कोई जगह सुरक्षित, साफ़, सुव्यवस्थित हो सकती है, और फिर भी तुम्हारी साँस छीन सकती है।

यूटा महिलाओं को सज़ा नहीं देता। उन्हें दिशा देता है। और दिशा देना, जब तुम चुन नहीं सकतीं, मिटाने का बस एक और तरीक़ा है।

वर्मोट

वर्मोट में जंगल हैं, लकड़ी के घर हैं, अंतहीन बर्फ़ है, ख़ामोश पहाड़ियाँ हैं, छोटे क़स्बे हैं जहाँ हर कोई हर किसी को जानता है। यह एक प्रगतिशील, शांत, सुरक्षित राज्य है। पर यह अलग-थलग, महँगा, पहुँचने में मुश्किल और अपनी धीमी रफ़्तार में जकड़ा हुआ भी है।

औरत तीन अलग-अलग हालात झेलती है। – भौगोलिक अलगाव – ज़िंदगी का बेतहाशा ख़र्च – असली सेवाओं की कमी

यह एक ऐसा राज्य है जो खुद को “सुकून भरा” बताकर बेचता है, पर सुकून अक्सर बस विकल्पों की ग़ैरमौजूदगी का नतीजा होता है।

यहाँ औरत इसलिए ग़ायब नहीं होती कि कोई उसे मिटा देता है। वह इसलिए ग़ायब होती है कि कोई उस तक पहुँचता नहीं।

पहाड़ों में अकेली रहने वाली महिला – 47

वर्ष

क्लेयर मॉन्टपिलियर के पास एक पहाड़ी पर बने घर में रहती है। यह रोमांटिक अकेलापन नहीं है। यह असली अकेलापन है।

सर्दी: बर्फ़, अँधेरा, जमी हुई सड़कें। गर्मी: दूरी, आसपास कोई नहीं, फ़ौरन कोई मदद नहीं।

वह सब कुछ खुद करती है: – लकड़ी – गाड़ी – पहले से तय ख़रीदारी – मरम्मत – आपात स्थितियाँ।

यह आज़ादी जैसा लगता है। यह रोज़ का गुज़ारा है।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है:

दुनिया बहुत दूर है।

स्थानीय सहकारी संस्थाओं में काम करने वाली महिला – 35

वर्ष वर्मोंट को “सस्टेनेबिलिटी” का विचार बहुत प्यारा है। को-ऑप, छोटी आपूर्ति शृंखलाएँ, स्थानीय उत्पाद।

उस छवि के पीछे कम मज़दूरी वाला काम है।

एमिली एक कृषि सहकारी संस्था के लिए काम करती है। काम कठिन है, ठंड है, और मज़दूरी मामूली। ज़िंदगी का खर्च आसमान छूता है: किराया, खाना और पेट्रोल।

कहानी यह कहती है कि “वर्मोंट एक मिसाल है।” उसके लिए वर्मोंट एक नाजुक संतुलन है जो किसी भी महीने ढह सकता है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है:

रोमांटिक नज़रिया उसकी असली मेहनत को मिटा देता है।

वह महिला जो शून्य सहारे के साथ

परिवार चलाती है – 39 वर्ष सारा बर्लिंगटन में रहती है। दो बच्चे, एक छोटे कारोबार में नौकरी, और एक पूर्व पति जो कभी होता है, कभी नहीं।

वर्मोंट प्रगतिशील है, हाँ, पर सेवाएँ धीमी, कम और दूर हैं। स्कूल जूझ रहे हैं, इलाज महँगा है, और आर्थिक मदद नाममात्र की है।

हर दिन एक खामोश जंग है: सब कुछ अकेले सँभालना, एक बड़े इलाक़े में इधर-उधर भागना, बिना किसी सुरक्षा जाल के आपात स्थितियों का सामना करना।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है:

राज्य सहारे के बारे में बहुत बात करता है, पर देता बहुत कम है।

वह महिला जो शहर से भागती है और खुद को भ्रम में रखती है

कि वह नई शुरुआत कर रही है – 31 वर्ष बहुत-से लोग शांति की तलाश में वर्मोंट आते हैं। शांत घर, प्रकृति और ज़िंदगी की धीमी रफ़्तार।

ओलिविया बोस्टन से आई थी। उसने सोचा था कि उसे संतुलन मिलेगा। उसे मिले आसमान छूते दाम, अकेलापन और नौकरी के गिने-चुने मौक़े। नज़ारा लाजवाब है। पर अगर तुम्हें समुदाय चाहिए, हलचल चाहिए, मौक़े चाहिए, तो यहाँ कुछ नहीं है।

उसकी अनुपस्थिति घुल-मिल न पाने की है:

वर्मोंट स्वागत करता है, पर दरवाज़े नहीं खोलता।

उपसंहार – वर्मोंट

वर्मोंट ख़ामोशी है, साफ़ हवा है, चिंतन है। पर यह दूरी भी है, बेतहाशा खर्च भी है, भावनात्मक अलगाव भी है।

महिलाएँ एक ऐसे राज्य की दरारों में जीती हैं जो सिर्फ़ उन्हीं के लिए काम करता है जिनके पास पहले से बहुत कुछ है:

– पैसा – स्थिरता – रिश्ते – सेहत

जिनके पास यह सब नहीं है, उनके लिए यहाँ की ज़िंदगी एक अकेली और खड़ी चढ़ाई बन जाती है।

चिंतन – वर्मोंट

वर्मोंट में महिलाओं की अनुपस्थिति उतनी साफ़ नहीं दिखती जितनी कठोर राज्यों में। यह ज़्यादा महीन है। ज़्यादा सलीक़ेदार। ज़्यादा छिपी हुई।

यह तीन कारणों से पैदा होती है:

– सादगी का मिथक, जो थकान को मिटा देता है – शांति की क्रीमत, जिसे हर कोई नहीं चुका सकता – भावनात्मक दूरी, जो ज़रूरतमंदों को अलग-थलग कर देती है

यह अध्याय बिना किसी फ़िल्टर के कहता है: प्रकृति पर्याप्त सुरक्षा नहीं है। और खामोशी हमेशा शांति नहीं होती। कभी-कभी वह बस सुनने की कमी होती है।

वर्जीनिया

वर्जीनिया एक ऐसा राज्य है जो दो स्तरों पर जीता है: – संस्थागत स्तर (वॉशिंगटन डीसी बस कुछ ही दूरी पर है) – ग्रामीण स्तर (ऐपलेशिया और वंचित इलाक़े)

यह अमेरिकी इतिहास का पालना है, पर यह उन जगहों में से भी है जहाँ आधुनिक असमानताएँ सबसे ज़्यादा दिखती हैं: हर तरफ़ फ़ौज, नौकरशाही, उत्तर में सिमटी दौलत, दक्षिण-पश्चिम में गरीबी, जीवंत कॉलेज वाले शहर और ठहरे हुए उपनगर।

यहाँ औरत तीन मोर्चों पर लड़ती है:

– संस्थाओं का बोझ – परंपराओं का बोझ – इलाक़ों के फ़र्क़ का बोझ

राज्य के हर हिस्से में उसकी मौजूदगी ज़रूरी है, पर वह उस भूमिका में खींच ली जाती है जो हर इलाक़ा उससे माँगता है।

उत्तर की अमीर महिला – 34 वर्ष

उत्तरी वर्जीनिया में वॉशिंगटन में काम करने वाले रहते हैं: अधिकारी, विश्लेषक, संघीय कर्मचारी और ठेकेदार।

एलेना सरकार से जुड़ी एक कंपनी में काम करती है। अच्छी तनख्वाह, करियर की संभावनाएँ, नामुमकिन ज़िंदगी।

ज़िंदगी का खर्च बेहद ऊँचा है: बेक़ाबू किराए, घंटों निगल जाने वाला ट्रैफ़िक, और निचोड़ लेने वाला काम का समय।

यहाँ औरत गरीब नहीं है। वह थकी हुई है।

उसकी अनुपस्थिति पेशेवर है:

ढाँचों को चलाए रखने के लिए हर कोई उसे ढूँढता है, पर कोई उसे पूरी तरह टूट जाने से नहीं बचाता।

रिचमंड की अफ्रीकी अमेरिकी महिला – 39

वर्ष

रिचमंड एक ऐसा शहर है जो आज भी एक पैर अपने इतिहास में रखकर जीता है: नस्लीय अलगाव, मोहल्लों को बाँटती अदृश्य रेखाएँ, जूझते स्कूल, भारी असमानताएँ।

अमीना एक अस्पताल में नर्स का काम करती है। कठिन शिफ्टें, मुश्किल मरीज़, कठिन मोहल्ला। हर दिन एक भागदौड़ है।

रिचमंड फिर से उभरता शहर है, पर यह उभार हमेशा पहले गोरे इलाकों में आता है।

उसकी अनुपस्थिति नस्लीय और सामाजिक है:

वह व्यवस्था का स्तंभ है, पर प्राथमिकताओं की सूची में सबसे नीचे रहती है।

ग्रामीण ऐपलेशिया की महिला – 50 वर्ष

शहरों के बाहर वर्जीनिया पूरी तरह बदल जाता है। खाली सड़कें, पहाड़, बिखरे घर, जड़ जमा चुकी गरीबी।

लिंडा वाइज़ काउंटी के पास रहती है। वह एक दुकान में काम करती है, अपनी बीमार माँ की देखभाल करती है और घर सँभालती है। पास में न कोई इलाज है, न सार्वजनिक परिवहन, न कोई अर्थव्यवस्था।

उसकी पूरी ज़िंदगी उसके कंधों पर टिकी है। समुदाय छोटा है, पर इतना मज़बूत नहीं कि सबको सहारा दे सके।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक और ढाँचागत है:

वह वहाँ रहती है जहाँ राज्य नहीं पहुँच सकता।

शार्लट्सविल की महिला – 28 वर्ष

शार्लट्सविल एक यूनिवर्सिटी शहर है, युवा, बौद्धिक, प्रगतिशील। कागज़ पर परफ़ेक्ट।

असल में, नहीं।

माया कैपस के पास एक कैफ़े में काम करती है। ऊँचे किराए, कम मज़दूरी, छात्रों की अस्त-व्यस्त ज़िंदगी, शून्य स्थिरता।

यहाँ संस्कृति समृद्ध है, पर ज़िंदगी नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और सांस्कृतिक है:

वह शहर का हिस्सा है, पर उसकी खुशहाली का हिस्सा नहीं।

उपसंहार – वर्जीनिया

वर्जीनिया पहचानों की एक गुदड़ी है जो आपस में जुड़ती नहीं। ऊपर बेहिसाब दौलत, नीचे बेहिसाब गरीबी। एक तरफ़ आधुनिक शहर, दूसरी तरफ़ भुला दिया गया ऐपलेशिया।

महिलाएँ इस मोज़ेक के हर टुकड़े पर जीती हैं, पर कोई उन्हें सचमुच मुख्य किरदार नहीं मानता।

ज़रूरत पड़ने पर वह चलती रहती है, जब राज्य को सुविधा हो तो ठहरी रहती है, और हमेशा काम की रहती है।

चिंतन – वर्जीनिया

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति भीतरी बँटवारे से पैदा होती है: बँटा हुआ इलाक़ा, भारी इतिहास, असंतुलित अर्थव्यवस्था।

महिलाएँ वह गोंद हैं जो यह सब जोड़े रखती हैं, पर राज्य उन्हें नज़ारे का हिस्सा मानता है, समाज को चलाने वाली ताक़त नहीं।

यह अध्याय साफ़ कर देता है: वर्जीनिया बढ़ रहा है, पर सबके लिए नहीं बढ़ रहा। और जो पीछे छूट जाते हैं, वे ज़्यादातर वे महिलाएँ हैं जो सहारा देती हैं,

देखभाल करती हैं और रक्षा करती हैं, जबकि उनकी रक्षा कोई नहीं करता।

वॉशिंगटन

वॉशिंगटन एक राज्य नहीं है: यह एक इंजन है जो परफ़ेक्ट नज़ारे का भेस धरे हुए है। जो इसे बाहर से देखते हैं, उन्हें हरियाली, जंगल, पानी, और अपनी फ़ोटोजेनिक स्काईलाइन वाला सिएटल दिखता है। जो इसे अंदर से जीते हैं, वे जानते हैं कि यहाँ ताक़त का ऐलान नहीं किया जाता: उसे इस्तेमाल किया जाता है।

यह अमेरिका की उन गिनी-चुनी जगहों में से है जहाँ ताक़त राजनीति से नहीं, बल्कि तकनीक, समन्वय, पूँजी, वैज्ञानिक शोध और बुनियादी ढाँचे से आती है। अमेज़न, माइक्रोसॉफ़्ट, बोइंग, प्रशांत के बंदरगाह, विश्वविद्यालय, बायोटेक्नोलॉजी, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, वैश्विक व्यापार। पश्चिमी तट यहाँ सपने नहीं देखता: यहाँ वह अमल करता है।

वॉशिंगटन एक ऐसा राज्य है जहाँ:

– एक एल्गोरिदम किसी मेयर से ज़्यादा फ़ैसले करता है – एक प्रयोगशाला पूरे काउंटी से ज़्यादा पैसा घुमाती है – एक बंदरगाह पूरे देश को रोक सकता है – एक स्टार्टअप भविष्य बदल सकता है – एक शोधकर्ता वैश्विक बाज़ार पर असर डाल सकती है – एक मैनेजर दस देशों में मज़दूरों की रफ़्तार बदल सकती है

यह ताक़त है। वह जो टीवी पर नहीं दिखती। वह जो शोर नहीं करती। वह जो ख़ामोशी में बनाती है और नष्ट करती है।

इस परिदृश्य में महिलाएँ सिर्फ़ पृष्ठभूमि की किरदार नहीं हैं। वे बीच के पुर्ज़े हैं, दिमाग़ हैं, रणनीतियाँ हैं, संचालन हैं, ख़ालिस कमान हैं। और वे भारी क्रीमत चुकाती हैं: अकेलापन, बर्नआउट, लगातार दबाव, ऐसे करियर जो तुम्हें निगल जाते हैं, निजी ज़िंदगियाँ जो बिखर जाती हैं जबकि दुनिया नतीजों पर तालियाँ बजाती है। वॉशिंगटन कमज़ोरों को माफ़ नहीं करता। धीमे पड़ने वालों का इंतज़ार नहीं करता। गिरने वालों की रक्षा नहीं करता।

जो शिखर पर हैं, वे यह किसी से भी बेहतर जानते हैं। जिसने भी ताक़त को क़रीब से देखा है—और यहाँ तुम्हारी पंक्ति अपने-आप आ जाती है—वह दिखावे

और असर का फ़र्क़ तुरंत पहचान लेता है।

क्योंकि असली ताक़त मंच का खेल नहीं है। वह ज़िम्मेदारी है, जोखिम है, संयम है, और ग़लती की कोई गुंजाइश नहीं।

यही वॉशिंगटन है: महिला ताक़त की एक भारी दबाव वाली प्रयोगशाला, जहाँ सचमुच कमान सँभालने वाली महिलाओं के पास उसके बारे में बात करने का समय नहीं होता। उन्हें उसे सँभालना होता है।

और यह अध्याय उनका चित्र है। यह दिखाने की बाईस कलाएँ कि ऐसे राज्य के शिखर पर होने का क्या मतलब है जो कोई राहत नहीं देता।

प्रामाणिक टिप्पणी

“बिल और हिलेरी क्लिंटन के दौर में जिन वर्षों में मैं व्हाइट हाउस आता-जाता था—और मैं पहला कैलाब्रियाई था जिससे वे मिले—वे मुझे हमेशा “मिस्टर फ़्रेगा” कहते थे। दूसरे, जिलेट में मेरे अतीत की वजह से, मुझे “Balde-man” के नाम से जानते थे। दो नाम, एक ही वज़न: सटीकता, भरोसा, और ताक़त से कोई डर नहीं। एक बार तुमने कुछ ख़ास कमरे देख लिए, तो तुम तुरंत समझ जाते हो कि असल में कमान किसके हाथ में है और कौन बस अभिनय कर रहा है।”

एलेना – एआई रिसर्च डायरेक्टर (रेडमंड, 43

वर्ष

ताक़त: बेहद ऊँची क्रीमत: उसकी निजी ज़िंदगी एलेना दो सौ शोधकर्ताओं के साथ तालमेल बिठाती है। एल्गोरिदम, नैतिकता, फ़ंडिंग, वॉशिंगटन डीसी से दबाव। वह उत्पाद नहीं बनाती: वह भविष्य की व्यावसायिक आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की नींव रखती है।

उसका हाथ अदृश्य है, पर हर जगह मौजूद है। अगर एक नीति-रेखा बदलती है, तो पूरा बाज़ार बदल जाता है।

वह दिन में 14 घंटे काम करती है, कम सोती है, और कभी ग़लती नहीं करती।

ताक़त, असली ताक़त, तुम्हें आज्ञादी नहीं देती। वह तुम्हें ऐसी ज़िम्मेदारियाँ देती है जिन्हें कोई आम इंसान नहीं उठा सकता।

सारा – वीपी, अमेज़न ग्लोबल लॉजिस्टिक्स (सिएटल, 46

वर्ष

ताक़त: पूरे ग्रह पर संचालन का नियंत्रण क्रीमत: कोई इंसानी संतुलन नहीं हज़ारों लोग उस पर निर्भर हैं। बंदरगाह, विमान, रोबोटिक हब, वितरण के एल्गोरिदम। जब वह कुछ तय करती है, तो चौदह देशों में डिलीवरी का समय बदल जाता है।

वे उसे “दुनिया को चलाने वाली औरत” कहते हैं। वह ज़्यादा हँसती नहीं। उसके पास समय नहीं है।

यहाँ ताक़त बेरहम है: तुम दो बार ग़लती नहीं करते। कभी-कभी एक बार भी नहीं।

क्लाउडिया – सीईओ बायोटेक (बेलव्यू, 39 वर्ष)

ताक़त: जेनेटिक्स, निवेशक, नवोन्मेषी शोध क्रीमत: सर्जिकल अकेलापन क्लौडिया 1 अरब डॉलर मूल्य वाली एक बायोटेक कंपनी चलाती है। प्रायोगिक उपचार दुर्लभ बीमारियों के इलाज का तरीका बदल सकते हैं।

उसने रिश्ते खोए, दोस्तियाँ खोई, अपनी ज़िंदगी के हिस्से खोए। उसने सिर्फ़ एक चीज़ पाई: एक ऐसी दृष्टि जिससे हर कोई डरता है और जिसका हर कोई सम्मान करता है।

ताक़त पैसा नहीं है। ताक़त तब है जब दुनिया तुम्हारे फैसलों का इंतज़ार करती है।

तान्या – सिएटल बंदरगाह की डायरेक्टर (50 वर्ष)

ताक़त: वैश्विक बुनियादी ढाँचा क्रीमत: लगातार दबाव

बंदरगाह कभी नहीं सोता। वह भी नहीं।

कंटेनर, सुरक्षा, चीनी, कोरियाई और अमेरिकी कंपनियों के साथ रिश्ते। यहाँ ताक़त में कोई चमक-दमक नहीं: यह अराजकता को सँभालना है।

अगर वह ग़लती करती है, तो एक पूरी पसली रुक जाती है।

यही छवि और सार का फ़र्क़ है।

मेलिंडा फ़्रेंच गेट्स – सफ़ाई करने वाली से

वैश्विक ताक़त तक

ताक़त: स्वास्थ्य, शिक्षा और समानता पर वैश्विक असर। क़ीमत: इंसान बने रहना छोड़े बिना एक प्रतीक बन जाना।

सच, नांदो, यह है: मेलिंडा ताक़त में पैदा नहीं हुई थी। उसने ड्यूक में अपनी पढ़ाई का ख़र्च उठाने के लिए छोटे-मोटे काम किए, सफ़ाई का भी। उसका परिवार साधारण था, दौलत शून्य, ताक़त के नेटवर्क शून्य। सब कुछ जुड़ता गया: – एक कठिन डिग्री – माइक्रोसॉफ़्ट में पहली नौकरी, जब वह अभी एक छोटी कंपनी थी – योग्यता के बल पर अंदरूनी तरक्की – एक परोपकारी दृष्टि जो आज अरबों घुमाती है।

आज वह उन मेज़ों पर बैठती है जहाँ फ़ैसले होते हैं: – वैश्विक टीकाकरण – महिलाओं के स्वास्थ्य की नीतियाँ – शिक्षा का अधिकार – रणनीतिक निवेश – संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रम।

असली ताक़त। वह नहीं जो कैमरों की चमक में दिखती है। वह जो ज़िंदगियाँ बदलती है।

और ठीक इसी वजह से उसकी कहानी इतनी अहम है: क्योंकि वह नीचे से शुरू होती है और वहाँ तक उठती है जहाँ दुनिया की बहुत कम महिलाएँ पहुँचती हैं।

नाओमी – चीफ़ सिक्योरिटी ऑफ़िसर, बिग टेक (सिएटल, 45

वर्ष

ताक़त: वैश्विक सुरक्षा, साइबर इंटेलिजेंस क़ीमत: पेशेवर वहम

नाओमी कभी सचमुच नहीं सोती। वह पश्चिमी तट की एक टेक दिग्गज कंपनी की डिजिटल सुरक्षा चलाती है। वह प्रोटोकॉल तय करती है, हमलों का पहले से अंदाज़ा लगाती है, घुसपैठ रोकती है और संकट सँभालती है।

उसके पास छह सौ लोगों की टीम है। किसी भी मिनट कुछ भी हो सकता है।

असली ताक़त = ऐसी ज़िम्मेदारी जो दिल तोड़ देती है। क्योंकि जब वह ग़लती करती है, तो बैंक, अस्पताल और सरकारें धीरे-धीरे रुक जाती हैं।

कोई उसे नहीं देखता। पर हर कोई उस दुनिया का इस्तेमाल करता है जिसकी वह रक्षा करती है।

जेनिफ़र – सीएफ़ओ, माइक्रोसॉफ़्ट क्लाउड (रेडमंड, 51

वर्ष

ताक़त: वैश्विक आँकड़े, रणनीतियाँ, निवेश क़ीमत: दिमाग़ को कोई राहत नहीं वह अरबों को ऐसे सँभालती है जैसे वे किसी नोटबुक की पंक्तियाँ हों। वह उन लोगों में से है जो शेयर, बाज़ार और साझेदारियाँ हिला सकते हैं।

उसमें एक खूँखार क़ाबिलियत है: वह जोखिम को दूसरों से पहले देख लेती है।

वे उसे “स्थिर हाथ वाली औरत” कहते हैं। उसके बिना पूरा क्लाउड उद्योग आज जितना मज़बूत है, उतना नहीं होता।

क़ीमत? एक दिमाग़ जो कभी नहीं रुकता। और एक शरीर जो सालों से आराम की भीख माँग रहा है।

मेई लिंग – गूगल डीप-माइंड एग़ज़ीक्यूटिव (सिएटल

हब, 38 वर्ष)

ताक़त: उन्नत एआई शोध क़ीमत: अभिजात वर्ग के भीतर अकेलापन

मेई लिंग एक प्रतिभा है, पर उसे इसकी क़ीमत चुकानी पड़ती है। वह बचपन से जीनियस है, एमआईटी से ग्रेजुएट, फिर उन्नत एआई। अब वह उद्योग के सबसे ज़्यादा डराने वाले और सम्मानित समूहों में से एक का नेतृत्व करती है।

वह दुनिया को एक उन्नत एल्गोरिदम की तरह देखती है: रफ़्तार, सटीकता, दृष्टि।

पर उसकी सामाजिक ज़िंदगी एक रेगिस्तान है। उसका अकेलापन उसकी प्रतिभा के अनुपात में है। ताक़त बनाती है, पर अलग कर देती है। इज़ाबेल – गेट्स फ़ाउंडेशन ऑपरेशंस की डायरेक्टर (सिएटल, 47 वर्ष) ताक़त: वैश्विक असर क़ीमत: ज़मी हुई भावनाएँ इज़ाबेल ज़्यादा बात नहीं करती। वह व्यवस्था करती है। वह हिसाब लगाती है। वह अस्पतालों, टीकों, स्कूलों और महिलाओं के कार्यक्रमों में फ़ंड बाँटती है। वह कोई जाना-पहचाना चेहरा नहीं है। वह अरबों डॉलर के पीछे का लॉजिस्टिक दिमाग़ है। सरकारों, एनजीओ, वैज्ञानिकों, मंत्रियों के साथ काम करती है। जब तुम इस स्तर पर होते हो, तो तुम्हारे दोस्त नहीं होते, सिर्फ़ फ़ाइलें होती हैं। उसकी इंसानियत सुरक्षा के लिए छिपी रहती है। कार्ला – कोस्ट गार्ड कमांडर पीएनडब्ल्यू (टकोमा, 44

वर्ष

ताक़त: समुद्र, बचाव, संघीय अभियान क़ीमत: घिसा हुआ शरीर कार्ला उन टीमों की कमान सँभालती है जो तूफ़ानों, जहाज़ों, अवैध तस्करी और आपात स्थितियों का सामना करती हैं। वह फ़ौलाद की औरत है, जिसका सम्मान वे मर्द भी करते हैं जो किसी का सम्मान नहीं करते। उसने ज़िंदगियाँ बचाई, पर्यावरणीय आपदाएँ सँभालीं, उफनते समुद्र में रात के अभियानों का नेतृत्व किया। यहाँ ताक़त शारीरिक है। गंदी। असली।

क़ीमत? उसका शरीर अदृश्य निशानों से भरा है।

आंद्रेआ – चीफ़ इंजीनियरिंग ऑफ़िसर, बोइंग

एयरोनॉटिका (एवरेट, 49 वर्ष)

ताक़त: विश्व विमानन क़ीमत: लाखों लोगों की सुरक्षा अपने कंधों पर उठाना

आंद्रेआ विमानन के समाधान डिज़ाइन करती है। जब वह किसी पुर्जे पर दस्तखत करती है, तो वह पुर्जा पूरे ग्रह के ऊपर उड़ता है। वह उन गिनी-चुनी महिलाओं में से है जो उस दर्जे की इंजीनियरिंग टीमों का नेतृत्व करती हैं।

उसके पास ऐसा अधिकार है जो चिल्लाता नहीं। उसकी नज़र परखती है, हिचकती नहीं। उसकी नसें उस इंसान जैसी हैं जो एक भी पेंच ग़लत नहीं लगा

सकता।

क्रीमत? वह लगातार, खामोश डर जिसे सिर्फ़ कमान सँभालने वाले जानते हैं।

सोफ़िया – इमरजेंसी विभाग की डायरेक्टर, यूडब्ल्यू

मेडिकल (सिएटल, 52 वर्ष)

ताक़त: असली स्वास्थ्य सेवा, ऐसे फ़ैसले जो ज़िंदगियाँ बचाते या बर्बाद करते हैं
क्रीमत: घिसी हुई आत्मा

सोफ़िया वह है जो अराजकता फूटने पर अस्पताल को चलाए रखती है। वह सौंदर्य चिकित्सा में काम नहीं करती। वह वहाँ काम करती है जहाँ खून, ओवरडोज़, दुर्घटनाएँ, मानसिक संकट और भयानक गरीबी सामने आते हैं।

यहाँ ताक़त बेरहम है: अभी तय करो, कल नहीं। और वह तय करती है। हर दिन। बीस सालों से।

क्रीमत? अब उसे कुछ भी हैरान नहीं करता। और यह, किसी इंसान के लिए, महँगा पड़ता है।

हारुनी – पोर्ट ऑफ़ टकोमा सिव्योरिटी &

ट्रेड की डायरेक्टर (45 वर्ष)

ताक़त: अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सुरक्षा क्रीमत: लगातार भू-राजनीतिक दबाव में जीना

हारुनी वह औरत है जो इनसे बात करती है: – एफ़बीआई– नौसेना– जापानी कंपनियाँ– कोरियाई कंपनियाँ– अंदरूनी समन्वय– संघीय एजेंसियाँ।

वह क़ानूनी आवाजाही, जाँच, जहाज़ों की सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय ऑडिट सँभालती है। वह उस श्रृंखला के एक हिस्से को नियंत्रित करती है जो पश्चिमी तट को थामे रखती है।

क्रीमत? कोई शांत रात नहीं। हर आने वाला जहाज़ एक निजी ज़िम्मेदारी है।

झेन – अरबों डॉलर वाले एक फ़िनटेक

प्लेटफ़ॉर्म की सीटीओ (बेलव्यू, 36 वर्ष)

ताक़त: असली पैसा, लेन-देन, ऐसी प्रणालियाँ जो गिर नहीं सकतीं क़ीमत: ऐसी नैतिकता जिसका वज़न पैसे से ज़्यादा है

झेन के पास “टेक में महिलाएँ” वाली सोशल मीडिया कहानी के लिए समय नहीं है। वह खुद टेक है।

वह बिना जोखिम वाली वित्तीय प्रणालियाँ सँभालती है। वह हर मिनट लाखों घुमाती है। उसके पास ऐसी तकनीकी ताक़त है जो शीर्ष नेतृत्व पर भी भारी पड़ती है। वे इसे “ख़ामोश प्रहार” कहते हैं: जब वह बोलती है, फैसले बदल जाते हैं।

क़ीमत? एक नैतिकता जिसे हर दिन दूसरों के समझौतों से बचाना पड़ता है।

मिरियम – डिजिटल क्राइम्स यूनिट की प्रमुख, वॉशिंगटन

स्टेट पेट्रोल (उम्र 40)

ताक़त: अदृश्य जाँचें क़ीमत: हर दिन इंसानी अँधेरा देखना

मिरियम एक ऐसी यूनिट की कमान सँभालती है जिसके बारे में कोई नहीं जानता, पर जिससे हर कोई डरता है। साइबर अपराध, पीडोफ़ीलिया, अंतरराष्ट्रीय धोखाधड़ी, डिजिटल हिंसा, चुराई गई पहचानें। वही है जो प्रणालियों में घुसती है, ढूँढती है, वापस लाती है और तोड़ डालती है।

असली संचालन की ताक़त। इसमें कोई चमक-दमक नहीं। यह ज़रूरी है।

क़ीमत? उसका दिमाग़ ऐसी लड़ाइयाँ लड़ता है जो किसी को नहीं देखनी चाहिए।

लैला – ग्लोबल क्लाउड & एआई रणनीतियों की डायरेक्टर

(सिएटल, 48 वर्ष)

ताक़त: भविष्य के तकनीकी नियम तय करती है क़ीमत: लगातार मानसिक युद्ध में जीना

लैला मैनेजर नहीं है। वह डिजिटल इकोसिस्टम की वास्तुकार है। वह सरकारों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और संस्थाओं से बात करती है। वह ऐसी नीतियाँ लिखती है जो वैश्विक मानक बनेंगी। उसका दफ़्तर झील की ओर खुलता है, पर उसका दिमाग किसी और ग्रह पर रहता है। असली ताक़त यही है: दुनिया के समझने से पहले रास्ता तय कर देना कि वह किधर जा रही है।

क्रीमत? कोई विराम नहीं। कोई “बाद में” नहीं। कोई सामान्य ज़िंदगी नहीं।

रेचल – स्पेस मैनुफ़ैक्चरिंग ऑपरेशंस मैनेजर

(केंट, 44 वर्ष) ताक़त: निजी अंतरिक्ष उद्योग क्रीमत: धरती की ज़िंदगी से नाता टूट जाना

रेचल एक ऐसी कंपनी का संचालन चलाती है जो कक्षा में जाने वाले यानों के पुर्जे बनाती है: उपग्रह, मॉड्यूल, सेंसर।

जब कुछ काम नहीं करता, तो वे उसे सुबह तीन बजे फ़ोन करते हैं। जब सब कुछ काम करता है, तो कोई उसका नाम नहीं लेता।

अंतरिक्ष में ताक़त क्रूर है: एक ग़लती एक सेकंड में 40 करोड़ डॉलर जला देती है।

वह यह जानती है। और वह हर दिन उसी धार पर जीती है।

नूर – राज्य ऊर्जा नीति विभाग की

डायरेक्टर (ओलंपिया, 51 वर्ष) ताक़त: एक पूरे राज्य की ऊर्जा का भविष्य तय करती है। क्रीमत: हर दबाव समूह की नफ़रत झेलना।

नूर एक ऐसी औरत है जो ऐसे दस्तावेज़ों पर दस्तख़त करती है जो जलवायु, परिवहन, बिल की क्रीमत और औद्योगिक ज़िंदगी बदल देते हैं।

पर्यावरणवादी उसे बहुत धीमा मानते हैं। उद्योग उसे बहुत सख़्त मानते हैं। राजनेता उससे डरते हैं क्योंकि वह मुद्दों को उनसे बेहतर जानती है। ऊँचे स्तर की नौकरशाही ताक़त मीडिया के लिए अदृश्य है, पर सब कुछ वहीं तय होता है।

नूर बिना दिखे कमान सँभालती है। क्रीमत? सबसे आसान निशाना बनना।

हेलेना – राज्य सरकार के डिजिटल

ऑपरेशंस की प्रमुख (ओलंपिया, 46 वर्ष)

ताक़त: बुनियादी ढाँचा, डेटा, सार्वजनिक सेवाएँ क्रीमत: बहुत छोटी टीम के साथ एक पूरे राज्य की रक्षा करना

हेलेना अहम प्रणालियों में तालमेल बिठाती है: डिजिटल पहचान, बुनियादी ढाँचा, स्वास्थ्य सेवाएँ, स्कूल नेटवर्क, आपात स्थितियाँ।

वह जानती है कि उसकी प्रणाली पर एक हमला लाखों लोगों के लिए अराजकता का मतलब होगा। उसका फ़ोन कभी बंद नहीं होता। कभी नहीं।

वह एक ऐसी औरत है जो “ताक़त के धूसर पक्ष” में काम करती है: न राजनीतिक, न निजी। वह जिसे कोई नहीं देखता, पर जिस पर सब कुछ टिका है।

क्रीमत? अनिश्चितता का एक लगातार एहसास।

डाना – सीनियर वेंचर कैपिटलिस्ट, 3 अरब डॉलर का

प्रबंधन (सिएटल, 42 वर्ष)

ताक़त: तय करती है कि स्टार्टअप की दुनिया में कौन जिएगा और कौन मरेगा क्रीमत: एक ऐसी मशीन बन जाना जो कम महसूस करती है और बहुत ज़्यादा परखती है

डाना टेक कंपनियों में निवेश करती है। किसी प्रोजेक्ट को बर्बाद करने के लिए उसे बस “ना” कहना होता है। पचास नौकरियाँ पैदा करने के लिए उसे बस “हाँ” कहना होता है। उसमें उस इंसान जैसी सर्जिकल ठंडक है जो प्रतिभा को देखता है और बिना भावना के उसे परखता है। वह उद्यमी रूमानियत का ठीक उलटा है।

पूँजी की ताक़त सीधी है: जिसके पास पैसा है, वह दूसरों का भविष्य चलाता है।

वह यह बिना काँपे करती है। क्रीमत? भावनाएँ दफ़्तर के बाहर रहती हैं। हमेशा।

उपसंहार — वॉशिंगटन

वॉशिंगटन एक ऐसा राज्य है जो सिर्फ़ चलता नहीं: वह कमान सँभालता है। वह यह नारों या सम्मेलनों से नहीं करता, बल्कि उन हाथों से करता है जो तकनीक, समन्वय, शोध और बुनियादी ढाँचे को चलाते हैं। और इस व्यवस्था के भीतर महिलाएँ जगह माँगती नहीं: वे उसे ले लेती हैं।

वही हैं जो एल्गोरिदम, अस्पताल, बंदरगाह, ऊर्जा, अंतरिक्ष, सुरक्षा, पूँजी चलाती हैं। उनके पास अपने बारे में बात करने का समय नहीं है, न ही पसंद किए जाने में कोई दिलचस्पी।

उनकी ताक़त शोर नहीं करती। वह ढाँचागत है। वह कोड, अनुबंधों, मानकों और प्रोटोकॉल में छिपी है। यह वह ताक़त है जो बिना तस्वीर खिंचवाए फ़ैसले करती है।

वॉशिंगटन कोई नरम राज्य नहीं है। यह एक जटिल तंत्र है जो उन्हें खा जाता है जो सँभाल नहीं पाते। और उस ऊँचाई पर टिकी रहने वाली महिलाएँ प्रतीक नहीं हैं। वे स्तंभ हैं।

यह अध्याय यही दिखाता है: असली ताक़त मौजूद है, और यहाँ उसका चेहरा औरत का है।

चिंतन — वॉशिंगटन

वॉशिंगटन में महिलाओं की ताक़त दयालुता से नहीं, क्राबिलियत से आती है। वह “महिलाओं को आवाज़ देने” से नहीं आती, बल्कि इस बात से आती है कि यहाँ की बहुत-सी महिलाओं के पास ऐसे दिमाग हैं जो पूरे-पूरे क्षेत्रों को हिला सकते हैं।

वॉशिंगटन एक ऐसा राज्य है जहाँ मायने यह रखता है कि तुम क्या कर सकती हो, यह नहीं कि तुम खुद को क्या बताती हो। और जो महिलाएँ इस माहौल पर हावी हैं, वे बेहद ऊँची क्रीमत चुकाती हैं: अकेलापन, हद से ज़्यादा प्रदर्शन, कोष्ठकों में सिमटी निजी ज़िंदगियाँ, भावना पर नहीं बल्कि नतीजों पर बनी पहचानें।

ताक़त, असली ताक़त, कोई इनाम नहीं है। वह एक बोझ है। और जो उसे सचमुच उठाते हैं, वे शिकायत नहीं करते। वे उसे थामे रहते हैं। और वे हर दिन दिखावे और अहमियत के फ़र्क़ की क़ीमत चुकाते हैं।

इस राज्य में "लगभग" के लिए कोई जगह नहीं है। या तो तुम बराबरी पर टिकी रहती हो, या वे तुम्हें खा जाते हैं।

वॉशिंगटन की महिलाएँ बराबरी पर हैं। और अक्सर उससे आगे निकल जाती हैं।

लेखक का पत्र

मैंने ताक़त को क़रीब से जिया, यह समझने से भी पहले कि एक दिन मैं इसके बारे में लिखूँगा। व्हाइट हाउस में, जब बिल और हिलेरी क्लिंटन दुनिया का केंद्र थे, वे मुझे "मिस्टर फ़ेगा" कहते थे। पहला कैलाब्रियाई जिससे वे मिले। दूसरे, जिलेट में मेरे अतीत की वजह से, मुझे "Balde-man" कहते थे: एक काटने वाला, एक तराशने वाला, एक ऐसा आदमी जो कभी कोई रेखा नहीं चूकता।

तब से ताक़त मुझे प्रभावित नहीं करती। मैं उसे पहचानता हूँ। मैं उसे नापता हूँ। मैं जानता हूँ कि कब वह असली है और कब बस नाटक। वॉशिंगटन में नाटक बेकार हैं। यहाँ ताक़त बंदरगाहों के फ़ौलाद जितनी ठोस है, सर्वरों जितनी तेज़, एक ग़लत ढंग से कैलिब्रेट किए गए एल्गोरिदम जितनी नाजुक, एक ऐसे फ़ैसले जितनी महँगी जिसे पलटा नहीं जा सकता।

और जो महिलाएँ इसे अपने कंधों पर उठाती हैं, वे एक सीधी-सी बात याद दिलाती हैं: ताक़त विशेषाधिकार नहीं है। वह ज़िम्मेदारी है। और जिनके पास वह सचमुच होती है, वे कहते नहीं: वे दिखाते हैं।

वेस्ट वर्जीनिया

वेस्ट वर्जीनिया अमेरिका की सबसे ज़ख्मी जगहों में से एक है। यह पहाड़ हैं, खदानें हैं, ओपिओइड हैं, बेरोज़गारी है, अलग-थलग चर्च हैं, कमज़ोर स्कूल हैं, टूटे परिवार हैं। यह उन राज्यों में से है जिन्होंने सब कुछ खो दिया है: अपने उद्योग, अपने युवा, अपनी सेहत, अपना भरोसा।

यहाँ औरत जीती नहीं: वह मलबे को थामे रहती है।

बंद खदानों की महिला - 53 वर्ष

पूरे-पूरे क़स्बे कोयले पर जीते थे। फिर उन्होंने सब बंद कर दिया। लोग रह गए, पर नौकरियाँ नहीं।

लिंडा एक खनिक की पत्नी थी। अब वह दो छोटी नौकरियों, फेफड़ों की बीमारी वाले पति और एक ऐसे बेटे के साथ जीती है जो अब इस दुनिया में नहीं है।

उसकी अनुपस्थिति औद्योगिक है: राज्य ने पूरे क्षेत्र को छोड़ दिया और जो बचा उसे समेटने के लिए महिलाओं को छोड़ दिया।

ओपिओइड संकट में महिला - 37 वर्ष

वेस्ट वर्जीनिया अमेरिका की ओपिओइड तबाही का केंद्र है। एमिली ने अपनी बहन खो दी, उसका भाई नशा-मुक्ति से गुज़र रहा है, और उसका पति लत और होश के बीच फँसा हुआ है।

वह एक सामुदायिक केंद्र में काम करती है, और हर दिन वह देखती है जिसे बाक़ी देश अनदेखा करता है।

उसकी अनुपस्थिति चिकित्सीय भी है और राजनीतिक भी: वह एक ऐसी व्यवस्था की शिकार है जिसने एक पूरी पीढ़ी को तबाह कर दिया।

गहरे ऐपलेशिया की महिला - 44 वर्ष

अलग-थलग कर देने वाले पहाड़, बिना स्ट्रीटलाइट की सड़कें, नामुमकिन दूरियाँ।

कैरन सात सौ लोगों के एक गाँव में रहती है। स्कूल कमज़ोर हैं, इलाज दूर है, और अर्थव्यवस्था ठहरी हुई है।

उसकी ज़िंदगी नज़ारे जितनी ही ठहरी हुई है। और कोई उसे नहीं देखता।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है।

वह महिला जो वहाँ पढ़ाती है जहाँ कोई नहीं चाहता - 29

वर्ष

यहाँ युवा शिक्षक बेहद कम हैं। मेगन रुक गई क्योंकि कोई और नहीं रुकना चाहता था।

उसकी कक्षाओं में सदमे से गुज़रे बच्चे हैं, कमज़ोर परिवार हैं, और संसाधन शून्य हैं। यह ख़ालिस हिम्मत है, पर व्यवस्था उसे कोई इनाम नहीं देती।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है: राज्य उससे सब कुछ माँगता है और बदले में कुछ नहीं देता।

उपसंहार – वेस्ट वर्जीनिया

वेस्ट वर्जीनिया एक क्रूर याद दिलाता है: जब एक अर्थव्यवस्था गिरती है, तो पूरा समाज गिर जाता है।

औरत अकेला स्तंभ बनकर रह गई। पर एक पहाड़ को थामने के लिए एक स्तंभ काफ़ी नहीं।

चिंतन – वेस्ट वर्जीनिया

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति परित्याग से पैदा होती है। किसी और देश को इस तरह सड़ने के लिए नहीं छोड़ा गया। और महिलाएँ सबसे ऊँची क्रीमत चुकाती हैं: देखभाल, गुज़ारा, ख़ामोशी, ऐसी परंपराएँ जो पिंजरों की तरह जकड़ लेती हैं।

यहाँ सहना कोई गुण नहीं है। यह मजबूरी है।

विस्कॉन्सिन

विस्कॉन्सिन एक भौगोलिक और भावनात्मक विरोधाभास है: एक कृषि और औद्योगिक राज्य, कठोर और कोमल, विशाल और दम घोटने वाला। बीयर, दूध, कारख़ाने, जंगल, जमी हुई झीलें। अमीर विश्वविद्यालय, ख़ाली देहात, साँस लेने को जूझते शहर। यहाँ महिलाएँ ग़ायब नहीं होतीं, उन्हें सामान्य बना दिया जाता है, जैसे गुज़ारे का बोझ जन्म के अनुबंध में ही शामिल हो।

डेयरी वाली महिला – 45 वर्ष

विस्कॉन्सिन दूध है। पर हर गैलन के पीछे झुकती पीठें हैं, चीखते घुटने हैं, ऐसी ज़िंदगियाँ हैं जिन्होंने दशकों से कोई रविवार नहीं देखा।

सारा सुबह 4:00 बजे उठती है। किसी गुण की वजह से नहीं: मजबूरी की वजह से। दुहने के लिए गायेँ, ग़लतियाँ माफ़ न करने वाली मशीनें, कभी न ख़त्म होने वाली नौकरशाही, बर्फ़ जो सड़कों और उम्मीद दोनों को मिटा देती है। जब खेती काम न रहकर एक जानलेवा लॉटरी बन गई, तो बहुत-से मर्द ढह गए। और महिलाएँ? उन्होंने पतवार थाम ली, बिना कभी कप्तान कहलाए।

सारा की अनुपस्थिति कृषि की है, व्यवस्थागत है और क्रूर है।

वह सब कुछ करती है। वह पारिवारिक कारोबार को डूबने नहीं देती। फिर भी समाज में उसका कोई अस्तित्व नहीं, वह एक भूत है जो आमदनी पैदा करता है।

मिलवाँकी की महिला – 34 वर्ष

मिलवाँकी एक खुला घाव है: एक कठोर, असमान, परतों में बँटा शहर। आसमान छूती गरीबी की दर, छोड़ दिए गए स्कूल, और बेहिसाब हिंसा।

जैस्मीन एक ऐसे स्कूल में काम करती है जिसके पास न शिक्षक हैं, न फ़ंड, न भविष्य। उसके दो बच्चे हैं और एक साथी है जो तभी होता है जब उसकी ज़रूरत नहीं होती। हर सुबह वह ऐसे मोहल्लों से गुज़रती है जहाँ कोई सपनों की बात नहीं करता: यहाँ ध्यान हफ़्ता काट लेने पर है।

उसकी अनुपस्थिति शहरी है।

शहर उसका इस्तेमाल करता है और उसे घिस डालता है। वह उसे “मज़बूत” कहता है, तारीफ़ के भेस में एक अपमान।

कारख़ाने की महिला – 51 वर्ष

विस्कॉन्सिन का उद्योग अब वह नहीं रहा जो कभी स्थिरता और पेंशन का वादा करता था। आज यह रूलेट का खेल है: लंबी शिफ़्टें, ज़बरदस्ती का ओवरटाइम, और गिरती मज़दूरी जबकि ज़िंदगी का खर्च बढ़ता जाता है।

मारिया प्रोडक्शन लाइन की पुरानी कामगार है: घिसी कलाईयाँ, जवाब दे चुकी पीठ, शून्य गुंजाइश। वह एक ही हरकत हज़ारों बार दोहराती है, जैसे उसका शरीर बदली जा सकने वाली कोई मशीन हो।

उसकी अनुपस्थिति औद्योगिक है।

यह उस कामगार की अदृश्यता है जो सब कुछ चलाए रखती है, जबकि आधिकारिक भाषणों में कोई उसका नाम नहीं लेता।

ठंडे उत्तर की महिला – 57 वर्ष

उत्तरी विस्कॉन्सिन एक और ग्रह है: अंतहीन जंगल, मीटरों बर्फ़ के नीचे ठहरी झीलें, ऐसा अकेलापन जो तुमसे इजाज़त नहीं माँगता।

केरन सुपीरियर के पास एक केबिन में रहती है। बर्फ़ आधा साल रहती है। दूरियाँ सज़ा हैं: मीलों ख़ाली सड़कें हर चीज़ को सभ्यता से अलग करती हैं। यहाँ महिलाएँ ग़ायब नहीं होतीं: वे धीरे-धीरे घुल जाती हैं, जैसे ठंड में भाप।

उसकी अनुपस्थिति जलवायु की है और भौगोलिक है।

कोई उसे नहीं देखता क्योंकि कोई वहाँ पहुँचता ही नहीं।

उपसंहार – विस्कॉन्सिन

राज्य चलता है। कारख़ाने चलते हैं। खेत पैदावार देते हैं। शहर झटका झेल लेते हैं। और हमेशा, इस अस्थिर संतुलन के हर टुकड़े के पीछे, एक औरत है जो गंदा, ख़ामोश काम करती है।

पर कोई यह नहीं कहता। इसलिए नहीं कि कोई बदनीयती है। इसलिए कि ऐसा ही ज़्यादा सुविधाजनक है।

चिंतन – विस्कॉन्सिन

यहाँ अनुपस्थिति एक ज़हरीले सिद्धांत से पैदा होती है: “मिडवेस्ट की औरत स्वभाव से मज़बूत होती है।” उन लोगों के लिए एक सुविधाजनक कहानी जो उस मज़बूती की क़ीमत नहीं देखना चाहते। यह गुण नहीं है। यह कोई जन्मजात प्रतिभा नहीं है। यह गुज़ारा है जिसे नैतिक कर्तव्य का भेस पहना दिया गया है।

और जब गुज़ारा आदत बन जाता है, तो ज़िंदगी ज़िंदगी नहीं रहती।

वायोमिंग

वायोमिंग एक साँस लेता हुआ ख़ालीपन है। नुकीले पहाड़ों, अंतहीन घास के मैदानों, कभी न थमने वाली हवा, खुले घूमते घोड़ों, तेल के कुओं, ट्रकों, कोयले और दूरी की धरती। यहाँ जगह कोई अवधारणा नहीं है: यह एक ताक़त है जो तुम्हें गढ़ती है।

यह अमेरिका का सबसे कम आबादी वाला राज्य है। और महिलाओं के लिए सबसे बेरहम राज्यों में से एक। क्योंकि यहाँ ज़िंदगी पर बहस नहीं होती: उसका सामना किया जाता है। वह शारीरिक है, रोज़ की है, पूरी तरह। और ऐसी कोई सुरक्षा नहीं जिसे तुम ख़ुद न बना सको।

रैंच की महिला – 49 वर्ष

किम एक काउंटी जितने बड़े रैंच पर रहती है। उसके दिन आपात स्थितियों का बवंडर हैं: काठियाँ, जानवर, सुबह तीन बजे के प्रसव, हवा से उखड़ी बाड़ें, शिकारी जानवर, घुटनों तक बर्फ़।

क्या वह मर्द की तरह काम करती है? नहीं। वह ज़्यादातर मर्दों से ज़्यादा मेहनत करती है। क्योंकि जहाँ वे एक बार टूटते हैं और ढह जाते हैं, वहाँ वह दस बार टूटती है और चलती रहती है।

पर दुनिया की नज़र में वह इंसान नहीं है: वह एक कृषि-कार्य है, संपत्ति का एक कामकाजी हिस्सा, एक ऐसी मौजूदगी जिसे मान लिया गया है।

उसकी अनुपस्थिति कृषि की है, ढाँचागत है, सामान्य बना दी गई है।

ऑयल & गैस की महिला – 37 वर्ष

एलेक्स अमेरिकी ऊर्जा के नरम नर्क में डूबी हुई है। नामुमकिन शिफ़्टें, जानलेवा ठंड, मर्दों से भरे माहौल जहाँ मज़ाक़ ब्लेड से ज़्यादा काटते हैं। वह क़ाबिल है, साफ़ सोचने वाली है, और तैयार है। उन बहुत-से लोगों से कहीं ज़्यादा जो उससे ज़्यादा कमाते हैं। सम्मान उस तक किस्तों में आता है, जैसे कोई एहसान। बाक़ी है ख़ामोशी, इशारे, और मेहनत। पेशेवर, शारीरिक और मानसिक।

उसकी अनुपस्थिति औद्योगिक और यौन है:

वह इसलिए अदृश्य नहीं है कि वह अक्षम है, बल्कि इसलिए कि वह एक ऐसी जगह में बहुत ज़्यादा सक्षम है जो उसे स्वीकार नहीं करना चाहती।

छोटे क़स्बों की महिला – 55 वर्ष

यहाँ क़स्बे क़स्बे नहीं हैं: वे दो सौ-तीन सौ निवासियों वाले प्रतिरोध के केंद्र हैं। एक चर्च, एक दुकान, दो सड़कें, एक पार्ट-टाइम शेरिफ़।

लिंडा वह सब करती है जो समुदाय को डूबने नहीं देता: बैंक का काम, दवा की दुकान, स्वयंसेवा, बुजुर्गों के लिए राशन की ख़रीदारी, बच्चों की देखभाल, आपात स्थितियाँ, समितियाँ, अंतिम संस्कार, सहारा, मौजूदगी।

वह वह इंसानी तंत्र है जो छोटे-छोटे समुदायों को ढहने से बचाता है।

फिर भी कोई उसे नहीं देखता। उसके अस्तित्व को मान लिया गया है, अपने-आप चलने वाला, जैसे यह मैनुअल में लिखी भूमिका हो।

उसकी अनुपस्थिति नागरिक है: बुनियादी, पर बिना मान्यता के।

नेशनल पार्कों की महिला – 32 वर्ष

येलोस्टोन, ग्रैंड टीटन, ऐसे इलाक़े जिन्हें हर कोई जानने का दावा करता है, पर कोई सचमुच नहीं जानता।

वह रेंजर है, गाइड है, जीवविज्ञानी है, और विश्लेषण करने वाली है। जानवरों के आने से पहले वह उनकी आवाज़ें सुन लेती है। वह पैरों के निशान, ज़मीन और आपात स्थितियाँ पढ़ सकती है। नज़ारे पर उसकी असली ताक़त है, पर उसका कोई समुदाय नहीं। वह अकेलेपन में ऐसे जीती है जैसे कोई एक अदृश्य सीमा पर रहता हो: सभ्यता का हिस्सा महसूस करने के लिए बहुत ज़्यादा प्रकृति, खुद को कमज़ोर पड़ने की इजाज़त देने के लिए बहुत ज़्यादा ज़िम्मेदारी।

उसकी अनुपस्थिति पेशेवर और भौगोलिक है:

वह वहाँ है, निर्णायक, पर हर चीज़ से दूर।

उपसंहार – वायोमिंग

वायोमिंग बेतहाशा सुंदर है, साँस रोक देने वाला सुंदर, और जानलेवा कठोर।
यहाँ महिलाओं को अनदेखा नहीं किया जाता: उन्हें नज़ारे में सोख लिया जाता है।
हवा उन्हें टुकड़ा-टुकड़ा उड़ा ले जाती है, दूरी उन्हें थका देती है, अकेलापन उन्हें
ज्वालामुखी पत्थर की तरह तराशता है। और आखिर में वे नहीं जानती कि औरत
कहाँ शुरू होती है और इलाका कहाँ खत्म होता है।

चिंतन – वायोमिंग

यहाँ स्त्री की अनुपस्थिति खुद प्रकृति से पैदा होती है: जगह, ठंड, खामोशी,
अलगाव।
औरत इलाके का हिस्सा बन जाती है, जैसे उसे अधिकारों, सुरक्षा, किसी नेटवर्क
या समुदाय की कोई ज़रूरत ही न हो।
पर बात ठीक उलटी है। ठीक इसलिए कि वह अमेरिका के सबसे कठोर हिस्से
में रहती है, उसे दूसरों से ज़्यादा सुरक्षा की ज़रूरत है।
और इसके बजाय उससे चट्टान बन जाने को कहा जाता है। नज़ारा बन जाने
को। बिना आवाज़ किए गायब हो जाने को।

फर्दिनांदो फ्रेगा